RNI No. 7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 62 अंक : 08 प्रकाशन तिथि : 25 जुलाई कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 अगस्त 2025
शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

वीर कुंवर सिंह जी उज्जैनीया राजपूत वंश से थे, जो बिहार में राजपूती गौरव और शौर्य का प्रतीक माने जाते हैं। उनका जन्म 1777 में बिहार के भोजपुर जिले (आरा) के जगदीशपुर में हुआ था।

राजपूती रगों में लहू नहीं, ज्वाला बहती थी - यही थे कुंवर सिंह।
बुजुर्ग होते हुए भी रणभूमि में कूदे, क्षत्रिय धर्म की मिसाल बने।
1857 की क्रांति में तलवार उठा, मातृभूमि पर सर्वस्व वार दिया।
वीरता, त्याग और स्वाभिमान से रचा, राजपूती शौर्य का अमिट इतिहास लिखा।

बालोतरा संभाग की ओर से
सादर श्रद्धांजलि

श्री क्षत्रिय युवक संघ के
चतुर्थ संघ प्रमुख एवं संरक्षक

पूज्य भगवान सिंह जी रोलसाबसर

को शत् शत् नमन।

उनका तपस्वी जीवन, राष्ट्र और समाज के लिए किया गया समर्पण, युवाओं को दिए गए नैतिक व आध्यात्मिक संस्कार, सदा हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगे।
संघकार्य, सेवा, साधना और सादगी की प्रतिमूर्ति भगवान सिंह साहब का निधन, सम्पूर्ण समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।
हम बालोतरा संभाग के समस्त स्वयंसेवक, कार्यकर्ता एवं सामाजिक बंधु उन्हें कोटि–कोटि श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।
संघ की लौ से ज्योति जलती रहेगी,
भगवान सिंह जी की प्रेरणा सदैव पथप्रदर्शक बनी रहेगी।

–: श्रद्धानवत :–

मूल सिंह काठाड़ी, मूल सिंह चांदेसरा,गोविंद सिंह गुगड़ी, मनोहर सिंह सिणेर प्रथम, वाग सिंह लोहिड़ी (वीरमदेवनगर), चंदन सिंह थोब, दौलत सिंह मुंगेरिया, सोम सिंह लोहिड़ी (वीरमदेवनगर), भीम सिंह सिमरखिया, बलवंत सिंह कोटड़ी, हनवंत सिंह मवड़ी, हरी सिंह थोब, हीर सिंह कालेवा, पदम सिंह भाउड़ा, जोग सिंह नोसर, वीरम सिंह थोब, सज्जन सिंह कलावतसर, सुमेर सिंह कालेवा, करण सिंह दुधवा, उम्मेद सिंह सिणेर, ईश्वर सिंह सिणेर, रिड़मल सिंह बेरसियाला, ईश्वर सिंह पादरू, विवेक सिंह सिणेर, जेतमाल सिंह बिशाला, थान सिंह खबडाला, कृष्णपाल सिंह कल्याणपुर, भूपेंद्र सिंह कालेवा, राण सिंह टापरा, धीरेंद्र सिंह इंद्राणा, कुंदन सिंह तिलवाड़ा, मनोहर सिंह मिठौड़ा, नाथू सिंह काठाड़ी, महेंद्र सिंह रेवाड़ा जेतमाल, चंदन सिंह दईपड़ा खींचीयान, हिन्दू सिंह सिणेर, करण सिंह मूठली, पूर्ण सिंह सिणेर, डूंगर सिंह चांदेसरा, नारायण सिंह मूठली, दलपत सिंह इंद्राणा, नग सिंह हनवंतनगर, छतर सिंह कुंडल, महेंद्र सिंह पादरड़ी कला, पाबू सिंह करना, पदम सिंह कंवरली, विक्रम सिंह वरिया, चन्दन सिंह चांदेसरा, महेंद्र सिंह सिणेर, सोहन सिंह कालेवा, विशन सिंह चांदेसरा, लक्ष्मण सिंह गुड़ानाल, मूल सिंह जानकी, सुरेंद्र सिंह गुगड़ी (जवाहरसिंहपूरा), हुकम सिंह थोब, दिलीप सिंह हवेली, हर्षवर्धन सिंह काठाड़ी

बालोतरा संभाग
श्री क्षत्रिय युवक संघ

संघशक्ति

4 अगस्त, 2025

वर्ष : 62 अंक : 08

-: सम्पादक :-

राजेन्द्र सिंह राठौड़

शुल्क - एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

समाचार संक्षेप		04
चलता रहे मेरा संघ	श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर	05
पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)	श्री चैन सिंह बैठवास	06
क्या लिखा जाए?	श्री अजीतसिंह धोलेरा	10
सनातन धर्म	श्री गिरधारीसिंह डोभाड़ा	11
उपलब्धियों के दो पक्ष	श्री गजेन्द्रसिंह आऊ	15
किन्तु कहीं पर	श्री महेन्द्रसिंह गुजरावास	16
मन थकता नहीं हमारा	रतन कंवर सेतरावा	17
मातृशक्ति	सुश्री रश्मि रामदेरिया	18
विश्व का प्रथम जौहर और साका	श्री पदमसिंह ओसियां	20
जयचन्द पर देशद्रोह का आरोप एक सोचा...	श्री युधिष्ठिर	24
डूंगरपुर	श्री खींवसिंह सुल्ताना	28
आऊवा ठाकुर कुशालसिंह का भारत के.....	श्री भंवरसिंह मांडासी	29
अपनी बात		31

समाचार संक्षेप

संस्कार निर्माण शिविर :– श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्कार निर्माण शिविरों के अन्तर्गत 15 जून से 15 जुलाई के मध्य छः प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर लगाये गये। बगड़ी नगर (पाली) जयसमन्द (सलूम्बर) नग्गा गाँव (रामगढ़) टंहुका (भीलवाड़ा) दर्दपड़ा खीचींयान (बालोतरा) झांझमेर (भावनगर, गुजरात) में लगे इन शिविरों में 605 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविरों के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, अनुशासन, आत्मसंयम का प्रशिक्षण लिया साथ ही स्वधर्म, इतिहास एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त की।

संभागीय बैठकों का आयोजन :– श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य को विस्तार देने के लिए एवं सत्र 2025-26 की कार्ययोजना बनाने के लिए जून-जुलाई माह में बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर, महाराष्ट्र, जयपुर, पूर्वी राजस्थान, नागौर तथा देहली (एन.सी.आर.) संभाग ने अपनी दो दिवसीय बैठकों के आयोजन पर चर्चा कर उत्तरदायित्व निर्धारण किया गया।

गुरु पूर्णिमा उत्सव आयोजन :– श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति भवन, जयपुर में दिनांक 10 जुलाई को गुरु पूर्णिमा का पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। सायंकाल 6 बजे से प्रारम्भ उत्सव में गुरु पूर्णिमा के भजन गाये गये एवं सत्संग किया। संघप्रमुख श्री ने अपने उद्बोधन में गुरु पूर्णिमा की महत्ता पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि हम अपने गुरु तथा प्रेरक की शिक्षा को अपने आचरण में ढालें। पूज्य तनसिंह जी द्वारा स्थापित श्री क्षत्रिय युवक संघ वर्तमान में हमारा प्रकाश स्तम्भ है। इसके सिद्धान्त तथा मार्ग पर चलकर ही हम गुरु पूर्णिमा के उत्सव को मनाना सार्थक कर सकते हैं। आलोक आश्रम स्थित बाड़मेर कार्यालय में भी गुरु पूर्णिमा मनाई गई। पूर्व दिवस पर भजनों का कार्यक्रम भी रखा गया।

खमनोर में मनाया हल्दीघाटी विजय दिवस:– 18 जून 1576 ई. को महाराणा प्रताप तथा अकबर की सेना में हल्दीघाटी का विश्व प्रसिद्ध युद्ध हुआ और यहीं से महाराणा प्रताप स्वतंत्रता संघर्ष प्रारम्भ हुआ और इसी संघर्ष ने महाराणा प्रताप को राष्ट्र नायक व स्वतंत्रता के दीवानों का प्रणेता बना दिया। उसी दिवस को श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में खमनोर में विजय दिवस के रूप में 10 जून को मनाया गया। वक्ताओं ने महाराणा प्रताप के स्वतंत्रता प्रेम, त्याग, बलिदान तथा शौर्य का गुणगान किया तथा चेतक की स्वामीभक्ति की चर्चा की।

नाथद्वारा में 17 जून को ई. डब्ल्यू. एस. प्रमाण पत्र जागरूकता शिविर :– श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषांगिक संगठन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन ने आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्ण वर्ग के लिए ई. डब्ल्यू. एस. प्रमाण पत्र बनाने के लिये नाथद्वारा में जागरूकता शिविर का आयोजन कर 54 योग्य अभ्यर्थियों के फार्म भरवाये। इसके लिए आवश्यक सुविधाएँ यथा नोटेरी प्रमाणीकरण, राजकीय अधिकारी प्रमाणीकरण एवं ई-मित्र सेवाएँ एक ही स्थान पर जुटाई गई।

सीकर राव राजा कल्याणसिंह जी जयन्ती :– आधुनिक सीकर के निर्माता सीकर के राव राजा स्व. कल्याणसिंह जी की जयन्ती दिनांक 20 जून को सीकर में राजकुमार हरदयाल सिंह त्रैलोक्य राज्यलक्ष्मी ट्रस्ट के तत्वावधान में हर्षोल्लास से मनाई गई। वक्ताओं ने राव राजा के शिक्षा, समाज कल्याण तथा आधुनिक सीकर के निर्माण का उल्लेख किया।

करीरी में मातृशक्ति स्नेह मिलन :– 22 जून श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर संभाग के द्वारा करीरी गाँव में मातृशक्ति स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। गाँव की सैकड़ों विवाहित बहन-बेटियाँ इस अवसर पर गाँव आई

(शेष पृष्ठ 9 पर)

चलता रहे मेरा संघ

{मेवाड़ क्षेत्र के अपने प्रवास के समय माननीय भगवान सिंह जी (तत्कालीन संघप्रमुख) द्वारा एक स्थान पर दिए गये उद्‌बोधन का संक्षेप}

अभी हमने जो सहगीत गाया था, उसकी एक पंक्ति थी–'हम अपने-पन को भूल गए कुछ संभव हो तो याद करें'। अपने-पन को भूल जाने का अर्थ है–अपने आपको भूल जाना, अर्थात् हम कौन हैं, हमारा कर्तव्य क्या है, हमारे अपने कौन हैं, कर्तव्य पालन के लिए हमारे जीवन गठन में गुण क्या हो, हमारा भाव कैसा हो, आदि-आदि को भूल जाना। ऐसी भूल से हमारे जीवन की सार्थकता ही समाप्त हो जाती है। लेकिन भूली हुई को यदि याद कर लिया जाए तो जीवन प्रगति पथ पर चल पड़ता है।

भूली बात याद आ जाए, समझ आ जाए तो व्यवहार किए प्रकार बदल जाता है, यह इस घटना से स्पष्ट होता है। एक व्यक्ति फौज में था, जिसकी पत्नी गाँव में ही थी और उसके एक बच्चा भी हो गया था। फौजी जब छुट्टियाँ मिली तो गाँव के लिये रवाना हुआ। गाँव पहुँचने के लिए वह रेलगाड़ी से रवाना हुआ और अपने गाँव के निकट के रेल्वे स्टेशन पर मध्य रात्रि में उतरा। स्टेशन के पास ही स्थित एक सराय में सुबह तक रुकने के लिए एक कमरा ले लिया। कमरे में विश्राम करते हुए वह अपनी पत्नी व बच्चे के बारे में सोच रहा था कि पत्नी मुझे देखकर बहुत खुश होगी, मुझे भी बच्चा देखने का अवसर मिलेगा आदि-आदि। तभी उसे सराय के एक उसके पास के कमरे से बच्चे की रोने की आवाज आई। वह बच्चा बीमार था और उसकी माँ उसे डॉक्टर को दिखाने के लिए लेकर आई थी और सुबह होने का इन्तजार सराय के कमरे में कर रही थी। फौजी थका हुआ होने के कारण उस बच्चे के रोने की आवाज के कारण अपनी नींद में विघ्न महसूस कर रहा था। उसने जोर से चिल्ला कर कहा-यह कौन है इस बच्चे को चुप क्यों नहीं करवाती है। महिला तेज आवाज से डर गई और बच्चे को चुप करवाने का प्रयास करती रही मगर बीमार बच्चा रोता बन्द न हुआ तो फौजी गुस्से में उठा और उस अंधेरी रात्रि में अकेली महिला के कमरे के दरवाजे पर जोरदार पैर की चोट मारकर खोल दिया। महिला डर गई और विनती करने लगी कि बच्चा बीमार है, मैं चुप करवाने का प्रयास कर रही हूँ पर पीड़ा के कारण चुप होता ही नहीं है। फौजी ने गुस्से में पूछा-तुम किस गाँव से आई हो? उसने गाँव का नाम बताया तो फौजी सकपका गया क्योंकि उसने फौजी के ही गाँव का नाम लिया। फिर फौजी ने उसके पति का नाम पूछा तो क्योंकि वह राजपूत थी इसलिए पति का नाम मुँह से नहीं ले सकी। फौजी ने उसके देवर का नाम पूछा तो उसने बताया। वह तो फौजी का ही छोटा भाई था। तो फिर फौजी ने अपना नाम लेते हुए पूछा कि क्या तुम फलां की पत्नी हो? स्त्री ने हामी भरी। अपनी पत्नी और अपने बच्चे को ऐसी हालत में देखकर उसका हृदय पिघल गया। बच्चे को गोद में लिया पत्नी को गले लगाया। यह है अपने-पन का भाव। कुछ समय पहले तक परायेपन की दृष्टि से उस बच्चे के रोने से वह क्रुद्ध हो रहा था। अब अपने-पन की जानकारी मिलते ही तुरन्त उसका व्यवहार और भाव बदल गया।

हम अगर अपने-पन की भूल को याद कर लें, पहचाल लें तो व्यवहार ही बदल जाएगा। हम क्षत्रिय कुल में जन्मे हैं। क्षत्रिय का कर्तव्य है क्षात्रधर्म का पालन करना। क्षात्रधर्म का पालन करते हुए हमारे पूर्व पुरुषों ने जैसा त्याग किया, बलिदान किया, वैसा करने के लिए हमें क्षत्रिय के गुणों को धारण करना पड़ेगा। क्षय से त्राण करने वाले कर्तव्य के लिए हम तैयार कैसे हो सकते हैं, यही श्री

(शेष पृष्ठ 9 पर)

पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– **चैनसिंह बैठवास**

जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब इस धरा पर महापुरुषों का अवतरण होता रहा है।

युग युग से हैं लगे यहाँ पर देवों के दरबार
इस आँगन में राम थे खेले, खेले कृष्ण कुमार,
झूम उठे अवतार।।

सर्वशक्तिमान होते हुए भी महापुरुष की शक्ति छिपी हुई रहती है, वे प्रकट नहीं हुआ करते, अप्रकट ही रहते हैं। जैसे दियासलाई में अग्नि की सत्ता तो सदा रहती है, पर उसकी प्रकाशिका और दाहिका-शक्ति छिपी हुई रहती है, ऐसे ही महापुरुष संपूर्ण देश, काल, वस्तु, व्यक्ति आदि में सदा रहते हुए भी उनकी शक्ति छिपी हुई रहती है। इसलिए आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं, वे साधारण को साधारण और विशिष्ट को विशिष्ट लगते आये हैं। न राम प्रकट हुए, न कृष्ण ही प्रकट हुए।

त्रेता के राम को किसने पहचाना? शुरुवादी में अयोध्या का राजकुमार, फिर वत्कलधारी वनवासी के रूप में जाना गया। वनवास के चौदह वर्ष बाद अयोध्या के राजा के रूप में उनकी पहचान बनी, न कि भगवान के रूप में। राम काल में राम को नहीं समझ पाये, तो कृष्ण काल में कृष्ण को भी कोई समझ नहीं पाये। श्री कृष्ण को तो ग्वाले के सिवाय कुछ समझा ही नहीं। उन्हें छलिया कहकर उनका अपमान किया करते थे और उन्हें मारने के प्रयास भी कम नहीं हुए। द्वारकाधीश बनने के बाद उनका लोहा मानने लगे और उनसे भय भी खाने लगे।

पूज्य श्री तनसिंह जी का अवतरण भी एक महापुरुष के रूप में हुआ, पर जन मानस के सामने वे सदैव सामान्य बने रहे। वे असाधारण और प्रतिभावान होते हुए भी उन्होंने अपने दिव्य स्वरूप को कभी प्रगट नहीं होने दिया। वे जो कुछ प्रकट हुए अपने आचरण से ही हुए। महापुरुषों के आचरण को सामान्य बुद्धि से नहीं परखा जा सकता। वे स्वयं सिद्ध पुरुष थे, पर एक सामान्य व्यक्ति की तरह, सामान्य लोगों के बीच उनका उठना-बैठना रहा। उन्होंने अपना सारा जीवन एक सामान्य व्यक्ति की तरह अपने साथ रहने वाले सहयोगियों के साथ जिया।

पूज्य श्री तनसिंह जी को समझना सागर की थाह लेना है, उन्हें उनके स्तर का व्यक्ति ही जान सकता है, समझ सकता है, उनके हाव-भावों को भी वही समझ सकता है। साधारण स्तर का व्यक्ति उनका सही आंकलन नहीं कर सकता। पूज्य श्री तनसिंह जी एक बार बाला सती जी 'बापजी' के धाम पधारे। सती जी 'बाप जी' ने उनसे कहा-''**आप तो घणां छिप्योड़ा रैवो हो। आप प्रगट क्यों नहीं हो रहे हैं।**'' वे सती जी 'बाप जी' की इस बात पर मुस्कराकर रह गये। पूज्य श्री के साथ आए लोगों को बाला सती जी 'बापजी' ने कहा-''ये महापुरुष हैं, पर प्रगट नहीं हो रहे हैं।''

पूज्य श्री तनसिंह जी कभी-कभी पोसालिया (सिरोही) के पास ग्राम खलधर के बाबा देवाराम जी के वहाँ जाया करते थे। परस्पर दोनों का मौन संवाद ही हुआ करता था। देवाराम जी महाराज ने पूज्य श्री से कहा-''मैं तो तुम्हारे पीछे सदा जोगमाया को खड़ी देखता हूँ।''

अप्रकट की पहचान तो उनके स्तर का ही कर सकता है, फिर भी मानव स्वभाव है, कयास लगाते रहते हैं और इसी ढर्रे को अपनाते हुए लोगों ने अपनी-अपनी

समझ के अनुसार उनकी पहचान की, इस पर पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा–''कुछ लोगों ने मुझे समझने का दावा किया है। मन ही मन मैं उन पर हँस पड़ता हूँ, क्योंकि उन्होंने मेरा कुछ भी नहीं समझा है। जो मुझे बेचारा समझते हैं, उन्हें पता नहीं मैं अनन्त शक्ति का स्रोत और अनेक संकल्पों का जनक और पोषक हूँ। जिस चीज को चाहता हूँ, उसके पीछे हो जाता हूँ और उसे लेकर ही दम लेता हूँ। मैंने हथेली में सरसों उगाने का काम लिया है। ऐसे असंगठित भीरु और ईर्षालु लोगों की कौम को आत्मगौरव प्रदान करना और उन्हें वीरव्रती बनाकर पैरों पर खड़ा कर सहयोगी बना देना कितना असम्भव कार्य था, मगर मैं हारा नहीं, टूटा नहीं, आज भी उसी मार्ग पर हूँ। यह असम्भव सम्भव होकर रहेगा, इसे कोई नहीं टाल सकता। फिर बताओ मैं बेचारा कैसे हुआ। पर बात का दूसरा पहलू भी है। जो मुझे कर्म का अखण्ड प्रेरक मानते हैं, वे भी भूले हुए हैं। मैं सहयोग के बिना एक कदम आगे नहीं बढा सकता। मेरे घर में एक अविश्वासपूर्ण उपद्रव मेरी अनन्त शक्ति के साम्राज्य को नष्ट-भ्रष्ट कर सकता है। मेरे समाज का एक भी शिलादित्य और हैहुलराय मेरी आँख की किरकिरी बन जाता है। जिन पर विश्वास करता हूँ, उनका विश्वासघात मेरे हृदय को तोड़ डालता है। मैं निराश होकर सच्चे साथियों की खोज में निकल पड़ता हूँ। यह जीवन सारा चलने की कहानी बन गया है, फिर भी कुछ लोग मुझे दुर्भाग्य ही मानते हैं, तब भी उन्हें छोड़ने को जी नहीं चाहता।

''कुछ लोग मुझे निहायत अच्छा आदमी मानते हैं, पर वे नहीं जानते कि मैं कितना बुरा हूँ। कुछ लोग मुझे बुरा आदमी मानते हैं, पर उन्हें मालूम नहीं कि मैं कितना शरीफ, भला और नेक हूँ। कोई मुझे ढूंढना ही शुरू करे, पर्वतों की ऊँचाई से लेकर समुद्र की गहराई तक मैं हूँ। अच्छों और बुरों सभी का मेरे यहाँ आदर है। मैं किसका घर छोडूं और किस व्यक्ति को उपेक्षित रखूँ। मुझे तो घर-घर और दर-दर फिरना होता है। भले मेरे सहायक हैं और बुरे मेरे कार्य क्षेत्र हैं, पर बुरों के सामने कभी इतना नहीं उठता कि मैं उनकी पहुँच से बाहर चला जाऊँ और भले लोगों में भी इतना नीचा नहीं आता कि उन्हें अपने अच्छेपन का अहंकार हो जाए। फिर भी मैं न कुछ इच्छा करता हूँ। उत्कट अनुराग का आचरण करके भी भीतर सर्वथा निरासक्त और निस्पृह हूँ। मोह और निर्मोह का अजीब गोरख धंधा हूँ। जो कहते हैं मैं इन्द्रजाल की रचना करता हूँ-वे ठीक ही तो कहते हैं।

''मेरे कुछ गुर और सिद्धान्त हैं। उनके कारण मेरा आशुतोष स्वभाव भी है, पर जिसने आँखें ही नहीं खोली वह क्या देखेगा। मैंने तो देखा है इस दुनिया में अधिकांश लोग 10 वर्ष की और 12 वर्ष की मानसिक आयु से बड़े नहीं हैं, वे मेरी क्या जाँच करेंगे। थोड़ा पाकर झट से प्रमाण पत्र खिसका देते हैं जैसे जीवन के विश्वविद्यालय के वे ही सनातन उप कुलपति हों।''

पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने बारे में बताया-

''मैं इतना ही साधारण आदमी हूँ, इतना ही साधारण मेरा जीवन है, इतनी ही साधारण मेरी आत्मकथा है और मैं चाहता भी यही हूँ कि ऐसा ही साधारण बना रहूँ और लोग मुझे इसी रूप में जानें और जानते रहें ताकि दुनिया में यह सिद्ध हो सके कि साधारण लोगों की असाधारणता जब इस दुनिया में प्रगट होगी, तो संसार के बहुत बड़े चमकते हीरे उनके सामने बिल्कुल फीके पड़ जाएँगे। इसके सिवाय मैं असाधारण बन के करूँगा ही क्या? यदि मुझे विशिष्टता अपने अन्दर दिखाई देती है तो उसे अपनी परीक्षा मानता हूँ। वास्तविकता तो यही है कि मैं साधारणता ही पसन्द करता हूँ। यदि मुझे तुम कहीं ढूंढना चाहो तो देख लेना-राजमहल की अपेक्षा किसी झोपड़ी में अधिक प्रसन्नतापूर्वक बैठा होऊँगा, यदि किसी समारोह में भी होऊंगा तो सबसे पीछे अकेला दिखाई दूंगा।''

पूज्य श्री तनसिंह जी का जन्म इस समाज व राष्ट्र की विलक्षण उपलब्धि थी। पूज्य श्री जैसा व्यक्तित्व, सादा जीवन, उच्च विचार अन्यत्र मिलना अति मुश्किल है। वे ऐसे दिव्य प्रतिभावान व्यक्ति होते हुए भी उनका जीवन अत्यधिक सरल, निर्मल, साधारण रहा कि सामान्य जन उनको पहचान ही नहीं पाया। अनेक लोग जीवन भर उनके साथ रहे फिर भी उन्हें पहचान न सके, उन्हें पा न सके। हमारे लिए तो वे एक अबूझ पहेली ही बने रहे।

पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन की आध्यात्मिक क्षमताओं को विरले ही समझ पाये। उन्हें केवल दो व्यक्ति ही जान पाए-उनमें एक दिलावरसिंह जी चचाणा ने ज्यों हि उनको जाना त्यों ही वे इस संसार से विदा हो गये। दूसरे व्यक्ति थे-पूज्य श्री नारायण सिंह जी रेड़ा, जिन्होंने उनको जाना, उनके चरणों में समर्पित होकर उनकी प्राप्ति में लग गए।

सामान्यजन चाहे पूज्य श्री तनसिंह जी को पहचान न पाये, लेकिन उन्होंने स्वयं अपने को असाधारण, अलौकिक एवं युगावतार होने का अनेकों जगह इंगित किया है, अनेक जगह संकेत भी दिये हैं-

''मैं निर्झर हूँ पर्वत से बह गहरा नीचे तक आया हूँ।''

पूज्य श्री यहाँ झरने के प्रतीक के रूप में अपने को प्रकट कर रहे हैं। मैं निर्झर हूँ अथार्त् सतत् बहने वाला, शाश्वत, अविनाशी, परमानन्द हूँ, बिना विराम के निरंतर कर्मरत, नित्य व सदैव गतिमय बने रहने वाला अनादि हूँ।

''पगली धरती के आँचल को मैं तीर्थ बनाने आया हूँ।''

इस पृथ्वी पर पाप और अधर्म अधिक बढ गया, इसलिए दुष्टों का विनाश कर इस धरती को तीर्थ स्थल की तरह पवित्र और निर्मल बनाने हेतु मैं अवतरित हुआ हूँ यानी पागल दुनिया जो बिना ध्येय भागी जा रही है, उनको अपने धर्म, संस्कृति व कर्तव्यबोध कराने इस धरा पर अवतरित हुआ हूँ।

''गुमराह हठीलों के प्रांगण में मैं अलख जगाने आया हूँ।'' बिना समझ के रूढिगत जीवन जीने वाले ऐसे अड़ियल-गुमराहों को जो बिना किसी हेतु के ऊजड़ भागे जा रहे हैं, उनको अपने स्वधर्म, अपने नियत कर्तव्य कर्म का ज्ञान कराने उन्हीं के प्रांगण में अलख जगाकर उन्हें जागृत करने आया हूँ।

''हारे अर्जुन को कर्मयोग का पाठ पढाने आया हूँ।''

महाभारत में तो एक अर्जुन था। अब तो इस क्षत्रिय समाज में अनगिनत अर्जुन हैं जो अहंकार व मोह से ग्रस्त होकर निष्क्रिय होकर बैठे हैं। अकर्मण्यता व निष्क्रियता जीवन पर हावी है। ऐसे हारे, निराश अकर्मण्य बैठे क्षत्रिय समाज के लोगों को निष्काम भाव से कर्म प्रवृत करने के लिए आया हूँ।

''गाफिल तुमको अन्तर की मैं व्यथा बताने आया हूँ।''

स्वाभिमानी क्षत्रिय समाज की क्षत अवस्था देख पूज्य श्री का हृदय वेदना से भर गया। अपने स्वाभाविक कर्तव्य व दायित्व को भूल गये, उन्हें अपने स्वधर्म की भी कोई समझ नहीं रही, ऐसे क्षत्रिय समाज के गाफिल, ना समझ लोगों को अपनी व्यथा से रूबरू कराने क्षत्रिय समाज के बीच आये और अनेकों को अपनी व्यथा देकर व्यथित कर गये।

''अपने तप की ले मशाल मैं ज्योति जगाता आता हूँ।''

सुप्त क्षत्रिय समाज के पुनः क्षत्रियत्व का बोध कराने इस धरा पर अवतरित हुआ हूँ और नगर-नगर, गाँव-गाँव जागृति का संदेश देने निकल पड़ा हूँ।

मैं बनजारा हूँ कौन मेरा है साथी प्रीत मेरी शरमाती।
बालद लेकर चला युगों से, बन बन का मैं राही।।

पूज्य श्री कहते हैं-मैं बनजारा हूँ, मेर स्वभाव ही सतत् चलने का है, मैं नित्य हूँ, सत्य हूँ। समय की माँग

और जगत की आवश्यकता बनकर मैं तो युगों-युगों से इस धरती पर आता रहा हूँ।

''जन्म-जन्मों का मैं हूँ बिसाती।''

कोई जान ले, पहचान ले, जन्म-जन्मों के इस बिसाती को, पर ऐसा सम्भव नहीं है। पूज्य श्री को तो पूज्य श्री के स्तर का व्यक्ति ही समझ सकता है, वो स्तर यहाँ है नहीं, यह पूज्य श्री की दुविधा है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि ऐसे महापुरुष की पहचान सदियाँ बीत जाने के बाद ही होती है। ज्यों,-ज्यों समय बीतता है त्यों-त्यों अंधेरा छंटता जाता है और एक समय आएगा, जब आने वाली पीढ़ियाँ सदियों बाद पूज्य श्री का सही मूल्यांकन कर पाएगी और इनकी आराधना-अर्चना होने लगेगी और पूज्य श्री जनमानस के प्रेरणा के स्रोत बनेंगे तथा जन-जन के आराध्य होंगे। इस बात को पूज्य श्री की इन पंक्तियों से हम समझ सकते हैं-

''कभी आयेगा निश्चित सेवरा धीरज मेरा है केवल सहारा।
कभी पुष्पों से थाली भरेगी, दुनिया आएगी अर्चना करेगी।''

(क्रमशः)

पृष्ठ 4 का शेष

समाचार संक्षेप

तथा उत्साहपूर्वक स्नेह मिलन कार्यक्रम का हिस्सा बनी। इस अवसर पर वर्तमान समय में मातृशक्ति के उत्तरदायित्व पर व्याखान प्रान्त प्रमुख द्वारा दिया गया। बालिकाओं की साप्ताहिक शाखा लगाने पर चर्चा की गई।

चित्तौड़गढ़ में उद्यमी प्रोत्साहन कार्यशाला का आयोजन :- श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के तत्वावधान में 6 जुलाई को चित्तौड़गढ़ स्थित सीताफल अनुसंधान केन्द्र में उद्यमी प्रोत्साहन कार्यशाला में व्यापार एवं उद्योगों से संबंधित उद्योग स्थापना प्रक्रिया, जीएसटी प्रणाली, बैंकिंग ऋण सुविधा, स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी दी गई।

महाराजा मुकुटसिंह शेखावत संस्थान में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 28-29 जून को मारेना (उ.प्र.) में किया गया जिसमें श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्य विस्तार एवं आगामी शिविरों पर चर्चा की गई।

उदयपुर में युवा संवाद कार्यक्रम :- 5 जुलाई उदयपुर स्थित ओल्ड बॉयज एसोसिएशन भवन, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय में ''संघ, समाज और युवा शक्ति'' विषय पर कार्यशाला रखी जिसमें युवा ऊर्जा को समाज सापेक्ष लगाने तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली की जानकारी दी गई। ●

पृष्ठ 5 का शेष

चलता रहे मेरा संघ

क्षत्रिय युवक संघ बताता है, सिखाता है। प्राणी मात्र की पीड़ा से पीड़ित होने वाला क्षत्रिय भाव आज विलुप्त हो चुका है। उसी भाव को जाग्रत करने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। अपने अन्दर वे शक्तियाँ हैं मगर उनको पहचानने और जाग्रत करने की आवश्यकता है। शक्तियाँ साध्य नहीं होती, वो तो साधन हैं। साधन के लिए ही साधना करने लग जाएँ तो भूल हो जाती है। परमात्मा ने जो लक्ष्य हमारे लिए निर्धारित किया है, उसे नहीं पहचाना तो भूल हो गई। अपने कर्तव्य को पहचाने और उसी के लिए जीवन को बनाकर अपना लक्ष्य पूरा करने में जुटें। हम, अर्थात् क्षत्रिय समाज जो भूल चुका है, उसी की याद दिलाने और उसी के लिए जीवन ढालने का कार्य संघ करता है। यह याद दिलाने ही संघ आपके यहाँ भी आया था, आया है, आता रहेगा। ●

क्या लिखा जाए?

– अजीतसिंह धोलेरा

जो है ही, उनके बारे में कुछ भी बोलना या लिखना सर्वथा अर्थहीन है। तो सार्थक क्या है? आपश्री संघ थे, हम भी संघ बन सकें, यही सार्थक है।

आपश्री भगवान थे। हमने 'सिंह जी' नामक पूंछ लगाकर आपश्री को भगवानसिंह जी बना दिया। यह पूंछ आपश्री के लिए बोझा ही था और संयोग बैठते ही तोड़ कर फेंक दी और अपने असली रूप में भगवान बन गये।

आज श्रद्धेय श्री भगवानसिंह जी हमारे बीच सदेह नहीं हैं। लोग उनके नाम के आगे 'स्वर्गस्थ' लगा देते हैं। यह गलत है। सदेहावस्था में आपश्री सदा 'स्वस्थ' (स्व में स्थित) थे। विदेह होने पर आपश्री 'सर्वस्थ' हो गये। सभी के 'हृदयस्थ' (हृदय में रहने वाले) हो गये। जो सर्वस्थ हैं, वे स्वर्गस्थ कैसे बन सकते हैं? और भगवानसिंह जी के लिए स्वर्ग क्या मायना रखता है? स्वर्ग में कहते हैं, कल्पतरु होता है, जो इच्छानुसार भोग देता है। वो तो आपश्री को चाहिए नहीं। न तो आपश्री को इन्द्रासन पर बैठना है। जो कभी कहीं बैठे ही नहीं, संघ के लिए भागते रहे, दौड़ते रहे। वे कहीं भी कभी बैठ सकते हैं? स्वर्ग की अप्सराओं के नृत्य के प्रति कोई रुचि ही नहीं है। ऐसी दिव्य विभूति के लिए स्वर्गस्थ सम्बोधन सर्वथा अनुचित है।

गत पांचवीं जून की रात को समाचार मिला कि भगवानसिंह जी गये। कहाँ गये? कहाँ जाएंगे? आपश्री के लिए संघ और संघ परिवार के हृदय में जाने के, बसने के सिवाय इस पूरे संसार में ही नहीं, मोक्ष धाम में भी कोई जगह नहीं है।

भगवान कहीं जा सकते हैं? कहाँ से जाएंगे? कहाँ जाएंगे, वे तो 'यत्र-तत्र-सर्वत्र' ही थे, हैं और रहेंगे।

श्रद्धेय श्री भगवानसिंह जी जैसी पूर्णात्मा कभी कहीं अनुपस्थित होती ही नहीं। हाँ, हम अपने जीवन यापन में यदि उनकी उपस्थिति की अनुभूति नहीं करते हैं तो यह हमारा दोष ही नहीं, जघन्य अपराध ही है।

हम और ज्यादा जिम्मेदार बनें। संघ कार्य ही हमारा भोजन बन जाये। संघ की बातें, चर्चा हमारा परिधान बना रहे। संघ चिन्तन, मनन हमारी प्रार्थना भजन-धुन हो जाये। संघ की शाला, प्रशिक्षण शिविर स्थल हमारे मंदिर और उसमें उपस्थित लोग दर्शनीय मूर्ति बनें। संघ साधना को हम अष्टांगयोग मान लें। संघ प्रचारार्थ सम्पर्क यात्रा हमारे लिए चारों धाम की यात्रा बनी रहे। संघ सापेक्ष स्नेह मिलन हमारा अनुष्ठान हो जाए। संघ परिवार के दर्शन से हम सत्त्वबली बन जाएँ। श्रद्धेयश्री को इसके सिवाय और कोई श्रद्धांजलि है ही नहीं।

हम सब भगवानसिंह जी बनने का संकल्प लें, यही अभीप्सा है।

सनातन धर्म

– गिरधारीसिंह डोभाड़ा

जैसे ही हम खबरें सुनने के लिए टी.वी. चालू करते हैं, आजकल किसी न किसी चैनल पर सनातन धर्म को लेकर कोई न कोई टिप्पणी सुनाई देती है। तब प्रश्न यह उठता है कि आखिर यह सनातन धर्म है क्या? पहले हम सनातन शब्द को समझें कि यह सनातन है क्या? सनातन का मतलब है सदा रहने वाला, जिसका कभी नाश नहीं होता या जिसका कभी अन्त नहीं होता। आदि से अन्त तक जिसका अस्तित्व है। सृष्टि के निर्माण से लेकर सृष्टि के साथ-साथ वह भी चिरंजीव है। अक्षर है। सृष्टि है तो सनातन भी है। 'सनातन' समय है, काल है, चिरकाल है, जो कभी भी समाप्त नहीं होता और न होने वाला है, उसे सनातन काल भी कहा जाता है। यहाँ 'सनातन' शब्द काल का पूर्वज है।

यह तो काल या समय की बात हुई, तो फिर सनातन धर्म क्या है? लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व से धर्म शब्द के आगे कई भिन्न-भिन्न पूर्वज लगाकर भिन्न-भिन्न धर्मों को जन्म दिया गया। जैसे-बौद्ध धर्म, इस्लाम धर्म, हिन्दु धर्म इत्यादि। इस प्रकार मूल धर्म को अलग-अलग संज्ञाएँ देकर कई धर्मों में विभाजित किया गया और उनकी भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ अपनाई गई। जैसे-नमाज पढना, पूजा-पाठ करना, वगैराह-वगैराह। उनके लिए अलग-अलग स्थान भी रचे गये, जैसे-मंदिर, मस्जिद, चर्च, गिरजाघर आदि-आदि। कालान्तर में इसका परिणाम यह आया कि इन भिन्न-भिन्न धर्मों के मानने वाले अनुयायी अपने-अपने धर्म को बड़ा व महान् मानने लगे और मूल धर्म जो सनातन धर्म है, उसे भुला दिया गया। इस कारण संसार में अराजकता ने स्थान ले लिया। इन सभी धर्मों ने अपने-अपने उद्देश्य और मार्ग भी भिन्न-भिन्न बताए। जैन धर्म ने स्वर्ग प्राप्ति या मुक्ति का मार्ग अहिंसा और कठोर देह दमन का मार्ग अपनाया। बौद्ध धर्म ने संसार और कामनाओं को दुख का कारण बताकर उसका त्याग कर निर्वाण का मार्ग बताया। ईसाई धर्म ने प्रेम और सहनशीलता से शांतिप्राप्ति का मार्ग बताया। इस्लाम ने निराकार-निर्गुण भक्ति के मार्ग को अपना जिन्नत या स्वर्गप्राप्ति का मार्ग अपनाया, इत्यादि। लेकिन सनातन धर्म की बात कुछ और ही है।

इस सृष्टि की प्रकृति त्रिगुणात्मक होकर द्वन्द्वात्मक है। सृष्टि की मूल प्रकृति सतोगुणीय, रजोगुणीय और तमोगुणीय है। अर्थात् संसार के सभी प्राणियों में सत, रज और तम की प्रवृति रहती है। सभी प्राणी इन तीन गुणों से प्रभावित होकर वर्तन करते हैं। इन गुणों के वश होकर बर्तते हैं। इन गुणों में सत और तम एक दूसरे के विरोधाभासी हैं। इन दोनों की प्रकृति एक दूसरे के विरुद्ध की है। ये दोनों कभी एक साथ मिलकर नहीं चल सकते। संसार में, सृष्टि में इन दोनों का अस्त्वि तो है ही लेकिन दोनों का अस्तित्व मिलकर नहीं चल सकता। जैसे-प्रकाश और अन्धकार, ज्ञान और अज्ञान, न्याय और अन्याय, नीति और अनीति इत्यादि। जहाँ प्रकाश है वहाँ अन्धकार नहीं हो सकता और जहाँ अंधकार है वहाँ प्रकाश नहीं होता। जहाँ न्याय है वहाँ अन्याय नहीं होता और जहाँ अन्याय है, वहाँ न्याय नहीं होता। परिणामस्वरूप दोनों अपने-अपने अस्तित्व के लिए आपस में झगड़ते हैं, उनका द्वन्द्व चलता ही रहता है। इसलिए यह सृष्टि द्वन्द्वात्मक है। प्रकृति के ये गुण सनातनीय हैं और इनका कभी नाश नहीं होता। प्रकृति या सृष्टि के साथ ही ये अस्तित्व में आते हैं और इनके साथ ही वे अस्तित्वहीन हो सकते हैं, लेकिन यह सम्भव नहीं है इसलिए ये सनातनीय हैं। जिसे हम ईश्वर, गॉड या अल्लाह कहते हैं, उसकी कृति ही यह संसार है, यह सृष्टि है तो वह कभी नाश नहीं होगी। कृतिकार ही अपनी कृति का विनाश

करे यह सम्भव नहीं होता क्योंकि जब तक यह सृष्टि है तब तक ही ईश्वर, गॉड या अल्लाह है। सृष्टि के बिना उसके रचियता को, रचनाकार को कौन जाने? सृष्टि है तो सृष्टि कर्ता है। उपनिषद का एक सूत्र है **'एको अहम् बहुस्यामी'** अर्थात् ब्रह्म को ईश्वर को एक से अनेक होने की इच्छा हुई और उसने इस सृष्टि की रचना की। वह एक से अनेक हुआ। इसलिए हमारे वेद और उपनिषद कहते हैं कि कण-कण में भगवान हैं। जिसे हम परमात्मा कहते हैं, वह जड़, चेतन, प्राणी, मनुष्य सब में व्याप्त है। ब्रह्म या परमात्मा या आत्मा अविनाशी हैं, सनातन है। इसलिए सृष्टि भी सनातन है।

प्रकृति के ये गुण सत, रज और तम कायम रहने वाले हैं। जो कायम रहने वाले हैं वे सनातनीय हैं। अब प्रश्न यह है कि धर्म सनातन कैसे है या सनातन धर्म क्या है? धर्म शब्द संस्कृत के धृ धातु से बना है जिसका अर्थ है धारण करना। धारण क्या करना? जो-जो अच्छा है उसे धारण करना, अपने जीवन में उतारना ही धारण करना है। सत्य, न्याय, ज्ञान, प्रकाश, नीति वगैराह जो-जो अच्छाइयाँ हैं, जो-जो अच्छे गुण हैं या तत्व हैं, उन्हें धारण करना और उन्हें अपने आचरण में लाना ही सद्कर्म है। जो सद्कर्म है वह हमारा कर्तव्य है और जो हमारा कर्तव्य है, उसका पालन करना ही हमारा धर्म है और वही हमारे लिए श्रेयस्कर है। जो कार्य श्रेयस्कर है उसी को करने में, उसी का पालन करने में ही जीवन की सार्थकता है। जीवन की सार्थकता क्या है? यही कि जिसमें से हम निकले हैं, जिसमें से हमारा अस्तित्व हुआ है, जिस अंशी का हम अंश हैं, उसी में मिल जाना ही जीवन की सार्थकता है। नदी की सार्थकता इसी में है कि वह अपने तट पर के प्राणी, मानव, वनस्पति का कल्याण करते हुए बहकर सागर के जल में विलीन हो जाए, क्योंकि सागर के जल से ही नदी का अस्तित्व होता है। सागर के जल से ही नदी का जन्म होता है, यही सत्य है और जो सत्य है वह सनातन है। जो सनातन है वही धर्म है। हाँ, उस अंश को अंशी में विलीन होने में कई जन्म लेने पड़ेंगे लेकिन अंश को अंशी में विलीन हुए बिना उसके जीवन की सार्थकता नहीं होती। विलीन होना तब सम्भव है जब अंश अपने स्वाभाविक कर्तव्य का पालन करे, अपने स्वधर्म का पालन करे, जैसे नदी करती है।

स्वधर्म का पालन कैसे किया जाता है? हमारे निर्माता द्वारा हमारे लिए निर्मित कर्तव्य का पालन कैसे किया जाता है? इसके लिए हमें सत, रज और तम इन तीनों गुणों की प्रकृति और उनके बीच के द्वन्द्व को समझना पड़ेगा। जो सत है उसमें अच्छाइयाँ हैं और जो तम है उसमें बुराइयाँ हैं। मानव मात्र या जीव मात्र अच्छाइयाँ ही चाहता है। बुराइयाँ कोई नहीं पसंद करता। लेकिन जब तक अच्छाइयाँ पड़ी ही रहेंगी, सक्रिय नहीं होगी, तब तक कुछ नहीं होता। वैसा ही बुराइयों के सम्बन्ध में है। अब जो 'रज' है उसकी प्रकृति इच्छा और क्रियाशीलता की है। इच्छा या कामना है तो उसे पूरा करने के लिए क्रिया की जरूरत पड़ेगी। बिना क्रिया के, बिना कार्य के कुछ भी नहीं होता। जब इच्छा हुई तो उसे पूर्ण करने के लिए कार्य भी हुआ, क्रिया भी हुई। इच्छाएँ अच्छी भी होती हैं और बुरी भी होती हैं। इन्हें पूर्ण करने वाली क्रिया भी अच्छी या बुरी हो सकती है। जीवमात्र का श्रेय अच्छाइयों में ही है। सद्कर्मों से ही जीवमात्र का कल्याण साधा जाता है। सद् कार्यों के लिए सतोगुण की आवयकता होती है। सतोगुण की सक्रियता के लिए रजोगुण का साथ होना आवश्यक है। जिसकी प्रकृति कर्म की है। सद् और रज के संयोजन से सद्कर्म ही होते हैं। ऐसा ही तमोगुण के साथ है। तमोगुण की प्रकृति आसुरी वृति की है, जो विध्वंसात्मक है, विनाशक है, नकारात्मक है। तमोगुण और रजोगुण के संयोजन से जो क्रियाएँ होती हैं इससे संसार में असत्, अज्ञान, अन्धकार, अन्याय, अनीति, हिंसा इत्यादि अकल्याणकारी प्रवृतियाँ बढ जाती हैं और संसार में अराजकता फैल जाती है। संसार के मानव ही नहीं

जीवमात्र त्राहिमाम पुकार उठते हैं। रजोगुण का तमोगुण को साथ देने से आसुरी वृति या आसुरी संस्कृति पनपती है जो किसी के लिए भी हितकारी नहीं है। आसुरी वृति दैवी वृति या दैवी संस्कृति पर हावी होने का प्रयास करती है तो दैवी संस्कृति उससे बचने का, उसका विरोध करने का प्रयास करती है। इस प्रकार सतोगुणी प्रवृति और तमोगुणी प्रवृति के बीच संघर्ष चलता रहता है। इसमें रजोगुण की सक्रियता महत्त्वपूर्ण है। वह जिसको अधिक साथ देगा, उसका पलड़ा भारी रहेगा। देवासुर संग्राम इसी कारण से तो होते थे, होते रहते हैं और होते रहेंगे।

सतोगुण, तमोगुण और रजोगुण का निर्माण तो परमेश्वर ने ही किया है तो इसमें भेद या पक्षपात क्यों? भगवान स्वयं ने गीता में कहा है-जो मेरा भक्त है, जो मेरी शरण आया है, वह मुझे अधिक प्रिय है। फिर भी मनुष्य या जीवात्मा प्रकृति के इन तीनों गुण से अत्यन्त मोहित होकर गुण और कर्मों में आसक्त रहते हैं और परस्पर के हितों के बचाव के कारण उनमें संघर्ष होते रहते हैं। इस संघर्ष में जो भगवान का भक्त है, मतलब जो सतोगुणीय प्रवृति का है उसकी तो रक्षा होनी ही चाहिए। सतोगुण की रक्षा होनी ही चाहिए। सतोगुण की रक्षा ही तो 'परित्राणाय साधूनाम' है। यही तो हमारा कर्तव्य है, हमारा धर्म है। प्रकाश की जरूरत किसको नहीं है। अन्धकार को कौन चाहता है? न्याय के बदले अन्याय को कौन पसंद करेगा? नीति की जगह अनीति क्या हितावह है? ज्ञान प्राप्त करना कौन नहीं चाहेगा? गीता में भी भगवान ने कहा है कि ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग से ही भगवान की प्राप्ति होती है। ब्रह्म को जानना ही तो ज्ञान है। यही तो सनातन सत्य है। सनातन सत्य ही धर्म है और वही सनातन धर्म है, स्वधर्म है।

सतोगुणीय प्रवृति सत्य है तो तमोगुणीय प्रवृति असत्य है, आसुरी है जो सत्य पर हावी होना चाहती है। तामस प्रकृति स्वभाव से ही अहंकारी, स्वार्थी और क्रोधी है और उसका विस्तार सात्विक प्रकृति से अधिक होता है। इसी कारण वह सात्विक प्रकृति पर हावी होकर सात्विक प्रकृति के जीवों पर त्रास गुजारती है। त्रास बर्साती है। तमस का मार्ग ढलान का मार्ग है जिस पर चलने के लिए परिश्रम बहुत कम करना पड़ता है इसलिए वह आसान है। लेकिन है अहितकारी। सत् का मार्ग चढाई का, ऊर्ध्वगामी है इसलिए वह परिश्रम का मार्ग है, कठिन मार्ग है। त्याग और बलिदान का मार्ग है। सुख, आराम, समय का बलिदान देना पड़ता है, यहाँ तक कि अपने जीवन, अपने प्राणों का उत्सर्ग भी करना पड़ता है। परिणाम यह है कि इस मार्ग पर चलने वाले तादात में अधिक नहीं होते। सत् के मार्ग पर चलने वालों का कार्य क्या है? यही 'परित्राणाय साधूनाम', सद्मार्गीय जीवों की, तत्वों की रक्षा करना। स्वयं को तो सद्मार्ग पर चलना ही है और साथ-साथ सद्मार्गीय की रक्षा भी करना है। दुष्टों को दण्डित करना है और सज्जनों को क्षय से, नाश से बचाना है। जो क्षय से बचाता है उसे क्षत्रिय कहते हैं 'क्षतातित्रायते इति क्षत्रिय'। क्षत्रिय के कार्य को क्षात्रत्व कहते हैं और इस कर्तव्य को क्षत्रिय का स्वाभाविक कर्म क्षात्रधर्म कहते हैं। सद् की, सत्य, न्याय, नीति, ज्ञान, प्रकाश की रक्षा की किस काल में जरूरत नहीं है? हर काल में, हर युग में इसकी आवश्यकता है, इसलिए क्षात्रत्व या क्षात्रधर्म के पालन की मांग शाश्वत है, इसलिए क्षात्रधर्म भी शाश्वत है, सनातन है।

किसी कमरे में अंधकार को दूर करने के लिए प्रकाश की आवश्यकता होती है। प्रकाश के लिए दीपक की जरूरत पड़ती है। दीपक में तेल और बाती होती है। बाती को जलाया जाता है तब उसमें से प्रकाश उत्पन्न होता है जो अंधकार को भगाकर कमरे में उजाला फैलाता है। बाती प्रकाश तब देती है जब वह स्वयं जलकर खत्म होती रहती है और अपना अस्तित्व मिटा देती है। बाती जो बुझ जाती है तो प्रकाश गायब हो जाता है और तत्क्षण ही अंधेरा छा जाता है इसलिए बाती को निरन्तर ही जलने रहना पड़ता है। उसे आँधी और तूफ़ान से भी टक्कर लेनी पड़ती है।

क्षत्रिय का जीवन भी ऐसा ही है। क्षात्रधर्म के पालन के लिए क्षत्रिय को निरन्तर ही जलते रहना पड़ता है। कार्यरत रहना पड़ता है। आंधी और तूफानों, विरोधों और संकटों का सामना करना पड़ता है। क्षत्रिय को अपने कर्तव्य पथ पर अटल रहना पड़ता है। इसके लिए उसे अपने आपको योग्य बनाना पड़ता है, सक्षम बनाना पड़ता है। 'शक्ति शौर्य जो पास नहीं तो विजय नहीं जयकारों में' सक्षम बनना पड़ता है, योग्यता प्राप्त करनी पड़ती है। गीता–

शौर्यं तेजोधृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचाप्यपलायनम्।
दानमीश्वर भावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्।।

ये गुण जिस क्षत्रिय में हों, वही क्षात्रधर्म का पालन कर सकता है। दीप में पानी डालकर बाती को पानी में भिगोकर जलाई जाए तो बाती जलेगी ही नहीं। बाती को जलाने के लिए तेल या घी चाहिए। तेल या घी से भीगकर ही बाती जलेगी। सूखी बाती को जलाने से तो वह जलकर क्षण भर में ही राख हो जाएगी। बाती को बराबर जलाते रहने के लिए तेल या घी ही उसका उपयुक्त पदार्थ है। तेल या घी ही दीपक की योग्य, उचित खुराक है। निरन्तर प्रकाश प्राप्त करने के लिए दीपक को जलाकर दीप में निरन्तर तेल या घी का सींचन करते रहना पड़ता है और उसमें जमी कालिमा को साफ करते रहना पड़ता है। बाती पर कालीमा जम जाने के कारण वह ठीक से प्रकाश नहीं दे पायेगी फिर भले ही वह जलती रहे। क्षात्रधर्म का पालन करने योग्य बनने के लिए क्षत्रिय के लिए भी ऐसी ही शर्त है। क्षत्रिय में गीता में वर्णित गुणों का होना आवश्यक है। इन गुणों का निरन्तर अवलोकन भी करते रहना चाहिए अन्यथा इसमें भी विकृतियाँ आ सकती हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही कार्य कर रहा है। श्री क्षत्रिय युवक संघ बालकों, बालिकाओं, युवकों, युवतियों को स्वधर्म का ज्ञान देकर उसके पालन के लिए उचित गुणों का संस्कार देता है। वह अपनी शाखाओं, शिविरों और अन्य कार्यक्रमों द्वारा संस्कारों का निरन्तर सिंचन करता है और अवलोकन भी करवाता रहता है।

हम किसी चीज का निर्माण करते हैं तो उसके निर्माण के पहले उसका कार्य निश्चित करते हैं। फिर उसका निर्माण करते हैं। समय जानने की आवश्यकता हुई तो हमने घड़ी बनाई। घड़ी का कार्य है समय बताना। यही घड़ी ठीक से समय नहीं बताती है तो हम उसे दुरस्त करवाते हैं। फिर भी यदि घड़ी ठीक से समय नहीं दर्शाती है तो हम उसे फेंक देते हैं, उसका नाश कर देते हैं। ऐसे ही सब्जी काटने के लिए छुरी बनाते हैं और लिखने के लिये कलम का निर्माण करते हैं। दोनों का कार्य नियत किया हुआ है। कलम से न सब्जी काटी जाती है और छुरी से न लिखा जाता है। कलम का सब्जी काटने में उपयोग करेंगे तो सब्जी तो काटी जाएगी ही नहीं, कलम खराब और हो जाएगी। तब वह कलम कलम नहीं रहेगी। इसी प्रकार छुरी से लिखने जाएँ तो छुरी से लिखा तो नहीं जाएगा, छुरी कागज को फाड़ और देगी। घड़ी की प्रकृति समय दर्शाने की, कलम की प्रकृति लिखने की, छुरी की प्रकृति काटने की, इनकी यह प्रकृति तब तक रहेगी जब तक इनका अस्तित्व है। इस प्रकार इनका कार्य, इनकी प्रकृति सनातन हुई।

ईश्वर कहें, गॉड कहें, अल्लाह कहें, तत्व एक ही है। जिसने इस सृष्टि का निर्माण किया। जड़ हो या चेतन, सूक्ष्म हो या महाकाय, प्राणी, मानव सभी इस परम तत्व परमात्मा की रचना है। परमात्मा ने सभी जीवों में सत, रज और तम, इन तीनों गुणों को स्थापित किया है। कोई भी जीव इन तीनों गुणों से रहित नहीं है। गीता–

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यान्त्रिभिर्गुणैः।।

पृथ्वी पर, आकाश में या देवों में, अथवा इनके सिवाय कहीं भी ऐसा कोई जीव नहीं है, जो इस प्रकृति में से जन्में इन तीन गुणों से मुक्त हो। सृष्टि या प्रकृति के साथ

(शेष पृष्ठ 15 पर)

उपलब्धियों के दो पक्ष

– गजेन्द्रसिंह आऊ

लौकिक उपब्धियों में सबसे बड़ी उपलब्धि है राज्य सत्ता पर अधिकार। जिसका राज्य पर अधिकार हो जाता है उसके पास सभी लौकिक सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं। Power, Money & Reputation सभी कुछ उपलब्ध हो जाता है। इसलिए महत्त्वाकांक्षी राज प्राप्ति के लिए लालायित रहता है। वह राज चाहे गाँव का हो, प्रदेश का हो अथवा देश का हो। राज की चाह रखने वाला कोई सन्यासी नहीं हो सकता, वह भोगी ही होगा।

जब से इस धरती पर समाज व सभ्यताओं का विकास हुआ है आदमी ने अपने ही हाथ में राज्य सत्ता को रखने का प्रयास किया है। सदियों से इसके लिए न जाने कितना संघर्ष व खून खराबा किया है और आज भी कर रहा है। हर समाज अपना वर्चस्व इसी में मानता है कि उसका राज हो या फिर उसका प्रतिनिधित्व हो। अपनी ताकत का लोहा मनाने के लिए दूसरे साधन जैसे धन, पद, प्रतिष्ठा आदि दूसरे व तीसरे स्थान पर हैं।

दूसरा पक्ष है पारलौकिक उपलब्धियों वालों का। इस मार्ग पर चलने वाला उपरोक्त सभी उपलब्धियों को दूसरे दर्जे की मानकर अपनी साधना में तल्लीन रहता है। उसका मानना है कि लौकिक उपलब्धियाँ चाहे कितनी ही प्राप्त कर ले लेकिन है सभी अनित्य, अल्पजीवी व अल्पसुखदायी। इनका मानना है कि उपलब्धि मिले तो ऐसी कि उसके आगे सब कुछ फीका व तुच्छ लगने लग जाए।

इसमें श्री क्षत्रिय युवक संघ का दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट है। पहले पक्ष में संघ का विचार दर्शन है कि यदि राज्य चाहते हो तो प्रजा की सेवा के लिए, अपने प्राण देकर भी प्रजा हित होना चाहिए। पद, प्रतिष्ठा, राजनीति, धन, व्यापार सब कुछ सात्विक रूप से अर्जित किया जाए। यह सब समाज व राष्ट्र के हेतु हो। फिर धीरे-धीरे पारलौकिक क्षेत्र में प्रवेश हो जाएगा। व्यक्ति से समष्टि में प्रवेश का यही मार्ग है, समझ परिपक्व होने पर लौकिक क्षेत्र फीका व पारलौकिक क्षेत्र जीवन का ध्येय बन जाएगा। ●

पृष्ठ 14 का शेष..............सनातन धर्म

ही इन तीनों गुणों का अस्तित्व है इसलिए ये तीनों गुण सनातन हैं। जीव या मनुष्य का इन तीनों गुणों से प्रभावित होकर स्वभाव बनता है। इस स्वभाव से जन्मे गुणों के अनुसार उनके कर्म होते हैं, जो उनके स्वाभाविक कर्म हैं। उनका पालन करना उनका कर्तव्य है, वही उनका स्वधर्म है। परमात्मा सनातन है। उसकी रचना सनातन है। उसकी त्रिगुणात्मक प्रकृति सनातन है। इस प्रकृति के स्वभाव से जन्मे गुणों के अनुसार कर्म सनातन हैं, स्वभाव से उपजे गुणों के अनुसार नियत कर्म ही स्वधर्म है और वही सनातन धर्म है। गीता–

ब्राह्मणक्षत्रिय विशां शूद्राणां च परन्तप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणै:।।

इस प्रकार ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों तथा शूद्रों के कर्म स्वभाव से उत्पन्न गुणों के अनुसार विभक्त किए गये हैं। इसमें कोई कर्म न छोटा है और न बड़ा है। न कोई कर्म नीचा है और न कोई कर्म ऊँचा है। सभी कर्म समान हैं और अपने-अपने स्थान पर उचित हैं और आवश्यक है। सभी कर्म एक दूसरे के पूरक हैं। एक दूसरे के सहयोगी हैं।

सत्य, न्याय, ज्ञान, प्रकाश, श्रेय इत्यादि सद्गुणों की किसको चाह नहीं है, इनकी सुरक्षा कौन नहीं चाहता, इनकी सुरक्षा की आवश्यकता किस समय, किस युग में नहीं है? इनकी सुरक्षा की वृत्ति ही क्षात्रवृति है और इसका कार्य ही क्षात्रधर्म है। यही सनातन सत्य है और क्षात्रधर्म ही सनातन धर्म है। क्षात्रधर्म का पालन ही श्री क्षत्रिय युवक संघ की शिक्षा है। ●

किन्तु कहीं पर

– महेन्द्रसिंह गुजरावास

व्यक्तिगत उन्नति के लिए अभ्यास क्रम के शुरुआत की बात से या पारिवारिक सामञ्जस्य के लिए उलझे हुए सूत्रों को सुलझाने की छटपटाहट, विभिन्न सामाजिक आयामों को स्पर्श करते हुए अग्रेतर बढने की बात हो या माननीय मूल्यों और मर्यादाओं के संग अपने आपको ठीक करने की कवायद, सही मायने में उनकी ओर पहला कदम बढाने की इच्छा का उदय होता है। जीवन का आरम्भ है।

अनेकों बार ऐसे अवसर आते हैं जब परमेश्वर की प्रेरणा से अवतरित पुण्य प्रकाश के बीच हम वह पहला कदम बढाने को तत्पर होते हैं। जितनी ही बार ऐसे मौके आते हैं जब तक विचार, एक संकल्प का श्वेत तन्नुनुमा कोमल अंकुर जगत की लुभावनी और मनमोहक माया के बीजपत्र को चीरते हुए प्रस्फुटित होता है। लेकिन अधिकांशत: वे नवांकुर काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और अहंकार जैसी वातावरणीय प्रतिकूलताओं के कारण काल का ग्रास बन जाते हैं। जिनको सतसंग रूपी खाद-पानी की उचित मात्रा मिलती है, वे पल्लवित होने लगते हैं, बहुत कम हैं जिनमें कोमल नन्हें-नन्हें पत्ते निकलकर हरीतिमा धारण कर पाते हैं। शेष सभी सांसारिक माया की तेज धूप में झुलसाने लगते हैं और अपना अस्तित्व बचाने में कामयाब नहीं रहते। यद्यपि पूज्य तनसिंह जी ने इसे एक सामान्य प्रक्रिया माना है कि बोये जाने वाले सभी बीज वृक्ष नहीं बनते, उन्होंने हमें बताया कि 'कुछ पौधे पनपा करते मुरझाने के लिए' फिर भी कौन ऐसा चाहेगा कि इतने जतन के बाद उगने वाला अंकुर पौधा नहीं बने। और जो पल्लवित हो चुके तो पुष्पित और फलित न हो। बड़े अरमानों से, अपने हाथ से लगाए पौधे जब सूखने लगे। तो दुख और तकलीफ स्वाभाविक है। और पूज्य श्री ने इसको व्यक्त भी किया है-'पनपे ये पौधे टूट जायें या सूख जायें यह सह नहीं सकता।'

परमेश्वर की कृपा और हमारे प्रारब्ध के कारण हमारे जीवन में भी ऐसे अनेकों अवसर आते हैं, जब हृदय की गलियों में सद्संकल्पों के उदय होने की भूमिकाएँ निर्मित होती हैं। और कई बार ऐसे सद् विचार दुनियादारी के सभी झमेलों से उस पार निकल कर अंगड़ाई लेते हुए हमारे मन-मस्तिष्क में प्रकट होते हैं- इस नये साल से नियमित रूप से स्वाध्याय करूंगा, इस महीने से अपनी दिनचर्या निश्चित रूप से व्यवस्थित करके ही रहूंगा, इस जन्मदिन से हमेशा पूजा पाठ करूंगा, इस वर्ष रोज शाखा में जाऊँगा, इस सत्र में इतने शिविरों में भाग लूंगा, अब से प्रतिदिन इतने घण्टे पढना ही है, इस त्योहार से अनावश्यक खर्चे बन्द, अब से अमुक आदत को बाय-बाय, अगले सप्ताह से शोशल मीडिया से दूरी, कल से अपना स्क्रीन टाइम कन्ट्रोल, आज से पूरा ध्यान अपने लक्ष्य पर-वगैराह-वगैराह। परन्तु शीघ्र ही तो संकल्प का नवोद्भिद अंकुर तेज धूप और विपरीत हवाओं से मुरझा जाता है।

आखिर क्यों? क्यों होता है ऐसा? और बार-बार क्यों? क्यों आशातीत वृद्धि से पहले ही हर बार 'जैसे थे' की स्थिति बन जाती है।

आवश्यक खाद-पानी देने के बाद भी उसके जीवित रहने और विकसित होने के लिए एक तत्व और है जो उसके पनपने के लिए अनिवार्य है, और वह है उसकी सुरक्षा। हमने सारे जतन किए लेकिन सुरक्षा का बन्दोबस्त नहीं किया तो भरपूर संभावना है कि परिणाम शून्य ही रहे। पूर्व जन्मों के संचित कर्मों से और युगसापेक्ष मांग के विधान की भगवत कृपा से हमारे हृदय में अंकुरित सद्संकल्प की सुरक्षा है, सतत् सम्पर्क और निरन्तर प्रार्थना है। प्रेरणास्रोत से सम्पर्क और परमेश्वर से प्रार्थना ही उसकी सुरक्षा का एकमात्र आवश्यक शर्त है।

प्रलोभन और फिसलन में बहने की स्थिति बने और जीवन की नैया डगमगाने लगे, उस असमंजस पर प्रार्थना। क्या करूँ, क्या न करूँ की बेला उपस्थित हो और पांव लड़खड़ाने लगे, उस ऊहापोह में प्रार्थना। हर विपरीत परिस्थिति में, हर ठोकर पर प्रार्थना। हे भगवान! मैं तो बढना चाहता हूँ पर बढ नहीं पा रहा, और मेरी इतनी ताकत भी नहीं कि उसकी सुरक्षा कर पाऊँ। आपके सहयोग के बिना मेरा एक कदम चलना भी मुमकिन नहीं है-

जल जल कर उठने वालों को, दो मंगल वरदान।
किन्तु कहीं पर गिर जाते हैं, उठने दो भगवान।।
प्रभु जी दो मंगल वरदान

मन थकता नहीं हमारा

– रतन कंवर सेतरावा

क्षत्रिय का आदर्श था-**परित्राय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।** इस आदर्श के अनुरूप अपना जीवन बनाकर क्षत्रिय ने हर युग में समाज सेवा की। सज्जनों की रक्षा, समाज की अधर्म से रक्षा, समाज की मुक्ति लाभ के लिए सहायता व धर्म स्थापना में बनने वाली बाधाओं, पापियों का विनाश, अपने इस उद्देश्य की पालना में क्षत्रिय ने अनवरत संघर्षरत रहते हुए अनेकों बलिदान दिए लेकिने कोई भी संघर्ष और बलिदान उसे अपने कर्तव्य मार्ग से हटा नहीं सका, इसलिए क्षत्रिय ने भारत को गौरव प्रदान किया।

इतिहास की इस सीख को हमारे जीवन में भरने का महत्त्वपूर्ण कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा किया जा रहा है। एक ध्येय, एक मार्ग, एक नेतृत्व में सुसंस्कारित लोग संगठित हों तभी बन सकता है सच्चा संगठन। इस संगठन की प्रक्रिया का प्रारम्भ होता है व्यक्ति के स्वयं के जीवन को निखारने, संस्कारित करने से। जो स्वयं संस्कारित नहीं है वह न तो किसी सच्चे संगठन की आदर्श कड़ी बन सकता है और न ही किसी को सच्ची राह दिखा सकता है। यही है संघ का विचार, और इसी को प्रत्येक के जीवन में ढालने के लिए सामुहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली को अपनाया है। निरन्तर प्रक्रिया से गुणों को आत्मसात करने का अभ्यास करते हैं। इसलिए शिविरों के आयोजन कर उनमें लगातार उपयुक्त वातावरण में यह शिक्षण दिया जाता है। दूर-दराज के एकान्त स्थलों पर शिविरों का संचालन किया जाता है। वहाँ प्राकृतिक वातावरण में प्रात: चार बजे से रात्रि दस बजे तक लगातार व्यस्त रखा जाता है। वहाँ कठोर व कष्ट सहिष्णु जीवन जीने का अभ्यास होता है। प्रात: जागरण मंत्र-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद बाहू राजन्य कृतः।
उरुतदस्य यद्वैश्य पदम्यां शूद्रोऽजायतः।।

(ऋग्वेद, यजुर्वेद)

भगवन ब्रह्मा के द्वारा क्षत्रिय की रचना शरीर में भुजा से मानी गई है और भुजाओं का कार्य रक्षा करना है। इस मंत्र की सीख से जागृत होकर खेलों में मनोरंजनात्मक व मनोवैज्ञानिक रूप से आदर्श व्यवहार व संस्कार का बीजारोपण होता है।

प्रवचनों में कर्तव्य ज्ञान व चर्चाओं में संघ के विभिन्न पहलुओं पर विचारों का आदान-प्रदान होता है, जिससे मानसिक विकास की राह खुलती है। शिविरों का कठिन अनुशासन एक साधक के जीवन को निखार कर उसे सच्चा क्षत्रिय बनाता है। एक सच्चे क्षत्रिय को चरित्र बल अर्जित करना, पुण्य बल अर्जित करना और पर दुख कातर बने रहना सिखाता है। इन शिविरों में सत्य, ईमानदारी, कष्ट सहिष्णुता, धैर्य, चातुर्य, तपोबल, त्याग तथा किसी भी प्रकार की विपरीत परिस्थितियाँ क्यों न आ जाएँ अपने कर्तव्य पर अडिग बने रहने के गुण हमारे व्यवहार में निरन्तर अभ्यास के द्वारा उतारे जाते हैं। रात्रिकालीन कार्यक्रम जैसे अंताक्षरी, शास्त्रार्थ, विनोद सभा में बालक-बालिकाओं के अन्दर छुपी प्रतिभाओं को निखारता है, उन्हें मंच देता है। संघ-शिविरों में अपने अष्ट सूत्री कार्य-**शौच शुद्धि, संध्या, श्रम, सेवा, स्वाध्याय, चिंतन-मनन, मौन और समाधि** के माध्यम से आत्मोत्थान का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

पू. श्री तनसिंह जी ने लिखा है-

मेरे स्थूल कर्म अब नियोजित हो रहे हैं। सामान्य लोगों की दृष्टि अति दूर है, किन्तु मुझे इसी मार्ग के अन्तिम बिन्दू पर एक स्वर्णिम प्रभात भविष्य के गवाक्षों से झांकता हुआ दिखाई दे रहा है।

अत: हम सब भी भविष्य के इस स्वर्णिम प्रभात दर्शन, उनके बताए इस मार्ग पर चलते रहते ही कर पाएंगे। उन्होंने ही अपने एक सहगीत में गुनगुनाया है-

अभिनव तप से यहाँ जगत के भाग्य लिखे जाते हैं,
यहाँ प्रेम से मुद्मंगल हो नारायण सोते हैं,
नारायण सोते हैं,
अब जागो शिव उतरी कब से है यहाँ गंग की धारा,
मन थकता नहीं हमारा।

मातृशक्ति

– रश्मि रामदेरिया

**''विजय की देवी वरमाला ले गले डालने है आती,
खड़ी परीक्षा की बेला है शक्ति हमारी घबराती,
ये संचय तो फिर कर लेना बनो भाग्य के स्वयं विधाता,
कदम तुम्हारे काँप रहे क्यों नये युगों के निर्माता,
करो उपेक्षा भले काल की कौन काल से है बच पाता''**

''श्री क्षत्रिय युवक संघ'' जो कि महिलाओं के लिए ''मातृशक्ति'' नाम से जाना जाता है।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। इस सृजन की शक्ति को विकसित, परिष्कृत कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता का सु-अवसर प्रदान करना ही नारी से क्षत्राणी से मातृशक्ति का आशय है। महिलाओं में मातृशक्ति के जागृत होने से पूरा समाज अपने आप सारी शक्तियों से परिपूर्ण हो जाएगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ का ''मातृशक्ति विभाग'' क्षत्राणियों का मनोबल व आत्मविश्वास बढाने में बहुत योगदान दे रहा है। समाज में लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना जरूरी है।

"A women is the full circle, within her is the ability to creat nurture & transform."

एक महिला पूर्ण चक्र है, विकास की ओर उन्मुख होते ही पूरा परिवार व समाज आगे बढता है। मातृशक्ति के भीतर सृजन, पोषण और परिवर्तन करने की शक्ति है। उनकी शक्ति और संभावनाओं को पहचानना चाहिए। **''माता ही निर्माता भवति''** इतिहास में रानी मदालसा हुई, इनके पति का नाम ऋतुध्वज था यह नागराज अवश्वस्त की कन्या थी। रानी मदालसा के जो पुत्र थे उनके गर्भाधान में ही संस्कार निर्माण हुआ। इनके पहले पुत्र का नाम विक्रान्त (गतिशील) रखा गया। दूसरे का नाम सुबाहु (जिसमें बाहु हो) रखा, तीसरे का नाम अरिमर्दन रखा (आत्मा का न कोई मित्र ना कोई शत्रु फिर मर्दन किसका) चौथे पुत्र का नाम अलर्क रखा यह नाम रानी मदालसा ने रखा। अलर्क चक्रवती सम्राट बना। माता का रूप सर्वश्रेष्ठ है।

संस्कारों से ही जीवन के विभिन्न अवसरों को महत्त्व और पवित्रता मिलती है और यह समझ में आता है कि जीवन के विकास का निर्माण केवल शारीरिक गुणों से नहीं होता अपितु उसका सम्बन्ध बौद्धिक और आध्यात्मिक भावों से है जिसके प्रति मनुष्य को जागृत रहना चाहिए। संस्कार ही सदाचार की नींव होते हैं और सदाचार व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के लिए आवश्यक है।

**''कर्तव्यों और कर्मों से बनी ईश्वर के समकक्ष
मातृशक्ति और क्षत्राणि समहासिल करातीं लक्ष्य,
त्याग, सहनशीलता, समर्पणता का है सागर ईश्वर
सदृश्य प्रेरणा देती इनकी जीवन गागर''**

माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध कर अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना कर सद्शक्तियों का संरक्षण व संगठन किया था। मातृशक्ति की इस दिव्य लीला का आध्यात्मिक उत्सव होता है-नवरात्र। यह पर्व वास्तव में मातृशक्ति की साधना का पर्व है, नवजागरण का पर्व है। भारतीय संस्कृति में सर्वोच्च महत्त्व है। जीवन का प्रवाह, हमारी प्राणशक्ति का स्रोत मातृशक्ति ही है। ब्रह्माण्ड के हर तत्व में निहित व हर तत्व की सृजनकर्ता मातृशक्ति ही है।

मातृशक्ति समाज का मूल आधार है, जो हर रूप में अपनी भूमिका निभाती है-जैसे बेटी, माँ और बहना/नारी में कला, लज्जा, शालीनता, स्नेह और ममता जैसे गुण होते हैं जो उसे एक विशेष स्थान देते हैं।

**''पितृभिर्भ्रातृभिश्चेता: पतिभिर्देवहैरतथा
पूज्या भूषयितत्याश्च बहु कल्याणमीप्सुभि:''**

मातृशक्ति के बराबर गौरवपूर्ण कोई नहीं है। नारी को गृहशोभा तथा गृहलक्ष्मी कहा गया है, अत: इनका पद बहुत ही उच्च है, उसी का विवेचन उपर्युक्त दोहे में किया गया है। व्यावहारिक रूप से अधिक जिम्मेदारी वहन करने के कारण मातृशक्ति को अधिक मान-सम्मान दिया गया। माँ लक्ष्मी ने स्वयं कहा-''जो स्त्री सत्यवादी है सुन्दर वस्त्र से दर्शनीय लगती है, सद्गुणी पतिव्रता एवं भूषण आदि से शोभामान्य हो, सत्य बोले, प्रेम से बोले, प्रात: स्नान कर पूजा आदि करके जिस घर में यज्ञ और आहुति देती हो उसी के पास मैं रहती हूँ।'' मातृशक्ति की प्रतिष्ठा अपने गुणों और योग्यता के आधार पर ही है।

झांसी की रानी लक्ष्मी बाई बनकर तुमने युद्ध की सेना में वीर रस का संचार किया भक्ति रस में डूबी मीराबाई ने निश्चल प्रेम भक्ति का प्रचार किया।

नारी के व्यक्तित्व के प्रति सम्मान का भाव उनमें है और उसे सदैव एक स्वतंत्र चेतन सत्ता के रूप में ही स्मरण किया गया है। मातृशक्ति के गौरव का अनेक प्रकार से वर्णन है। गृहिणी ही गृह है। गृहिणी के द्वारा ही गृह का अस्तित्व है। मातृशक्ति को अपना उद्देश्य पता होना चाहिये हम एक क्षत्राणी हैं, क्षत्रिय कुल में जन्म लिया है। सिर्फ जन्म लेकर जीवन जीने को ही जीवन नहीं कहते। जीवन में शिक्षा के साथ-साथ दीक्षा लेना भी जरूरी है। उद्देश्य को पाने के लिए कठिनाईयों का सामना भी करना पड़ेगा। जिस किसी के जीवन में जितनी कठिनाईयाँ आती हैं उतना ही उसका जीवन उत्तम होता है।

उद्देश्य पाने के लिए स्वधर्म का पालन करना चाहिये, हमारा धर्म क्षात्र धर्म का पालन करना है। अपने कार्यों के स्वयं उत्तरदायी हों। मन, वचन, कर्म से मातृशक्ति को शुद्ध विचार वाला होना चाहिये। ''मैं'' शब्द को समाप्त करना चाहिये। 'श्री मातृशक्ति विभाग' के द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ सत्संग और स्वाध्याय सिखा रहे हैं। सत्संग-लगातार संघ के कार्यों से जुड़े रहें और स्वाध्याय-लगातार संघ के साहित्यों का अध्ययन करते रहें।

'किये बिना कुछ होता नहीं, दीये बिना कुछ मिलता नहीं' प्रतिफल की इच्छा ना करते हुए अपने अधिकारों को त्याग कर उत्तरदायित्व पर ध्यान देना चाहिये। विपत्ति के समय धैर्य और एकजुटता की आवश्यकता है। एक-दूसरे को सहयोग देना चाहिये। ईर्ष्या, निंदा, भेदभाव, झगड़ा, अभिमान, दिखावा, झूठ, कपट, कुसंग, आलस्य, वाचालता, अशुद्धि, विचार शक्ति की शून्यता व स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही को त्याग देना चाहिये। उपर्युक्त सभी मातृशक्ति के दूषण (अवगुणों) में आते हैं। अर्थात् हमें उदारता, सेवा, समर्पण, पूजा-पाठ, सादगी, संयुक्त परिवार, क्षमता, संतोष, क्षमा, विनय, लज्जा, मितव्ययता, सहिष्णुता, गंभीरता, मधुर वाणी आदि आभूषणों को अपनाना चाहिये। ●

हमारा आग्रह ईश्वर की रचना के ताने-बाने में अनावश्यक व्यवधान खड़ा करता है। लेकिन यह प्राणगत आग्रह बुरा होते हुए एक हकीकत है और इसी सत्संकल्प के सहारे ही तो बहुत कुछ शक्ति का विकसित होना सम्भव हो सका है। यह दो विपरीत भाव होते हुए भी उन्हें पूरक बनाना एक बहुत बड़ी समस्या है। ईश्वर ने चाहा, तो उसका भी समय पर कोई न कोई समाधान निकल आएगा।

- पू. तनसिंह जी

विश्व का प्रथम जौहर और साका

– पदमसिंह ओसियां

गजनी के किले का दृश्य, जहाँ यदुवंशी राजा गजसेन का दरबार लगा था। गजसेन के अनुज राणा सहदेव और कुछ दरबारी और प्रमुखों के साथ महत्त्वपूर्ण मंत्रणा कर रहे थे।

राजा गजसेन– राणा सहदेव गुप्तचरों द्वारा क्या सूचना मिली है खुरासान और रूम के बारे में।

राणा सहदेव–(दरबारी से) प्रमुख गुप्तचर को बुलाया जाए।

गुप्तचर–महाराजा गजसेन की जय हो।

राजा गजसेन–क्या समाचार लाए हो।

गुप्तचर–मामरेज का बेटा जलालुद्दीन अभी खुरासान का शासक बना है। खुरासान और रूम अपनी पहले की पराजय से हतोत्साहित सेना को प्रशिक्षण देकर संगठित कर रहे हैं और अपनी सैन्य कुशलता से सेना को प्रोत्साहित करने में सफल रहे हैं और गजनी पर पुनः आक्रमण की योजना बनाई जा रही है।

राणा सहदेव–महाराज श्री आपके नेतृत्व में हमारे सभी वीर सैनिकों ने मिलकर खुरासान के शासक मामरैज को मार गिराया और खुरासान और रूम की संयुक्त सेना को मार भगाया। हमने पिताजी राजा रिझसेन जी के बलिदान का मामरैज को मार कर बदला लिया अब मामरैज का पुत्र जलालुद्दीन फिर सेना को संगठित कर गजनी पर आंख दिखाने को उतावला हो रहा है।

राजा गजसेन–हमारी तैयारी क्या है?

सेनापति–हमारी सेनाएं पिछले विध्वंसकारी युद्ध से अभी उभरी नहीं हैं, घायल सैनिकों को औषधि दी जा रही है। इस वक्त अगर खुरासान और रूम मिलकर हमला करें तो हमारे विजय होने के आसार कम हैं।

राजा गजसेन–घायल सैनिकों को उचित औषधि दी जाए और अगले युद्ध की तैयारी की जाए।

राणा सहदेव–महाराज श्री के आदेश की पालना होगी।

राजा गजसेन–दरबार की मंत्रणा समाप्त की जाती है।

राजा गजसेन इस विपदा से उबरने के लिए कुलदेवी माँ स्वांगिया जी के मंदिर के कपाट बंद करके 3 दिन और रात देवी की आराधना में बैठे रहे, चौथे दिन देवी साक्षात प्रकट हुए।

राजा गजसेन–प्रणाम माता इस संकट की घड़ी में मुझे मार्ग दिखाएं माँ।

देवी–मैं तुझे तेरे और तेरे वंशजों के प्रारब्ध का परिचय देती हूं। तुम्हारे पास अब समय कम है, गजनी तेरे हाथों से निकल जाएगी। किन्तु तुम्हारी संतति कालांतर में यहां पुनः शासन करेगी परंतु तब वे वैदिक धर्म के अनुयाई नहीं होकर एक नए धर्म के अनुयाई बनकर शासन करेंगे।

राजा गजसेन नतमस्तक हो कुलदेवी के वचनों को गंभीरता से सुन रहे थे।

देवी–अपने वंश की सुरक्षा के लिए तुम अपने युवराज शालीवाहन को अपने विश्वस्त सैनिकों के साथ ज्वालामुखी में मेरी ही अवतारी देवी वैष्णो देवी के दर्शनार्थ रवाना कर दो और वह पूर्व की ओर प्रस्थान करे जहाँ उसके 15 राजकुमारों की वंश वृद्धि होगी।

इतना कह कर देवी आलोप हो गए।

राजा गजसेन ने पुनः देवी को प्रणाम किया और उनके आदेश अनुसार राजा गजसेन ने युवराज शालीवाहन को बुलाया।

युवराज शालीवाहन–प्रणाम पिता श्री

राजा गजसेन–युवराज माँ स्वांगिया जी ने मुझे साक्षात दर्शन दिए और तुम्हें ज्वालामुखी में वैष्णो देवी के दर्शन करने का आदेश दिया। युवराज शालीवाहन–जैसी आज्ञा पिताजी मैं माँ के आदेश और आपकी आज्ञा की पालना करते हुए वैष्णो देवी के दर्शनार्थ तुरंत प्रस्थान करता हूँ।

राजा गजसेन अपने विश्वस्त सैनिकों की टुकड़ी को 12 वर्ष के युवराज शालीवाहन के साथ भेजते हैं। इधर युवराज

ज्वालामुखी के लिए प्रस्थान करते हैं उधर गजनी के किले में राजा गजसेन दरबारी और राणा सहदेव के साथ मंत्रणा करते हैं। राजा गजसेन-गुप्तचरो को बुलाया जाए।

गुप्तचर-महाराज गजसेन की जय हो।

राजा गजसेन-खुरासान और रूम की सेना कहाँ तक पहुँची है।

गुप्तचर-बस कुछ ही कोष की दूरी पर है, खुरासान की सेना गजनी के दुर्ग को घेरने के लिए आगे बढ़ रही है।

राजा गजसेन-हमारी व्यूह रचना के अनुसार अपने से शक्तिशाली सेना पर पहले आक्रमण करना ही सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा है। पिताजी राजा रिझसेन जी ने भी शत्रु पर किले से बाहर जाकर हरियो (गजनी के किले से कुछ कोस दूर एक स्थान) तक जाकर शत्रु पर आक्रमण किया और इसी खुरासान के शासक फरीद और रूम (सीरिया) की संयुक्त सेना से लड़ते हुए बलि हुए और अपना बलिदान देकर भी गजनी को सुरक्षित रखा। अभी हाल ही में खुरासान का शासक मामरैज भी रूम की सेना को साथ लेकर आया जिसे हमारे वीर सैनिकों ने मार गिराया और उसकी सेना भागने पर विवश हुई। अब उसका पुत्र जलालुद्दीन फिर उसी रूम को साथ लेकर गजनी पर चढ़ाई करने आ रहा है ऐसी स्थिति में हम इंतजार नहीं करेंगे किले से बाहर निकल कर खुरासान की सेना में घमासान मचाएंगे क्या आप सभी युद्ध के लिए तैयार हैं?

सभी सरदार एक स्वर मे हम सभी तैयार हैं आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

महाराज गजसेन की जय हो

राजा गजसेन-राणा सहदेव आप किले की रक्षा का दायित्व निभाइए बाकी सभी सरदार अपनी अपनी सैनिक टुकड़ियों का नेतृत्व करते हुए शत्रु सेना पर धावा बोलने के लिए तुरंत तैयार हो जाएँ हमारे पास समय बहुत कम है दुश्मन सेना गजनी तक आ पहुँची है।

सभी सरदार एक स्वर में-आपके आदेश की पालना होगी राजा गजसेन की जय हो।

जय श्री कृष्ण, हर हर महादेव के उद्‌द्कोष के साथ सैनिकों को युद्ध के लिए प्रस्थान को तैयार किया।

वरिष्ठ रानी पाटमदे सोलंकीणी जी और हंसावती पंवारजी ने राजा गजसेन को कुंकू तिलक किया आरती उतारी और युद्ध के लिए विदा किया। विक्रम संवत् 251 में राजा गजसेन ने अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए खुरासान और रूम की संयुक्त सेना का वीरता से सामना किया शत्रु सेना के अनेकों सैनिक मारे गए तो वहीं गजसेन के भी अनेकों सैनिक हताहत हुए कुछ समय के युद्ध के बाद शत्रु सेना बलपूर्वक किले में प्रवेश करने ही वाली थी कि राजा गजसेन ने अपने 900 सैनिकों के साथ शत्रु सेना में घमासान मचा दिया। तलवारों की खनखन के साथ ही खचाखच, किसी का सिर कटा तो किसी की पेट की आंतड़ियाँ निकलने लगी। इसके साथ ही गजसेन पर भी शत्रु दल के सैनिकों ने घेर कर वार किया और वे वीरता से लड़ते हुए सेकड़ों 'शत्रुओं' को मार कर वीरगति को प्राप्त हुए।

कुलदेवी की भविष्यवाणी राजा के लिए मुख्य मानसिक बाधक थी। यह जानते हुए कि युद्ध में उनकी मृत्यु निश्चित थी फिर भी उन्होंने संयम नहीं खोते हुए शत्रु सेना का वीरता से मुकाबला किया। राजा गजसेन अपने 900 वीर सैनिकों के साथ बलिदान हुए किंतु गजनी का किला अभी भी सुरक्षित था।

उधर किले में सभी सामंतों और प्रमुखों की सहमति से युवराज शालीवाहन की अनुपस्थिति में राजा के छोटे भाई राणा सहदेव को राजा का कार्य ग्रहण करवाया गया। राणा सहदेव गजनी के किले में दरबारी और सामंतों से मंत्रणा करते हुए।

राणा सहदेव-किले में कोई भी शत्रु घुस नहीं पाए रात्रि में पहरा और भी सख्त कर दिया जाए तीर बाज सैनिको को सतर्क किया जाये।

सेनापति-महाराज के आदेश की पालना होगी।

राणा सहदेव की जय हो

राणा सहदेव-भंडारची को बुलाया जाए।

भंडारची-राणा सहदेव की जय हो।

राणा सहदेव-किले में खाद्य सामग्री की क्या स्थिति है

भंडारची-हमारे भंडार गृह में 30 दिन का खाद्यान्न बचा है।

कुछ दिन के घेरे के बाद किले के अन्दर घुसने का प्रयास करते हुए शत्रु सैनिकों के कई सैनिक मारे गए। मगर राणा सहदेव के भी कुछ सैनिक हाताहत हुए। अब किले की खाद्य सामग्री भी बहुत कम रही थी। राणा सहदेव और उनकी रानी पंवारजी रात्रि कालीन अपने कक्ष में मंत्रणा करते हुए।

राणा सहदेव-हमने निर्णय लिया है कि किले के द्वार खोलकर हम वीरता से लड़ते हुए शत्रु का भारी नुकसान करेंगे लड़ते हुए बलिदान हो जाएंगे मगर हमारे पुरखों का यह दुर्ग शत्रु को अपने जीते जी नहीं सौंपेंगे।

रानी पंवारजी-इस विकट घड़ी में आप अपना कर्तव्य निभाते हुए वीरता से लड़ते हुए अमर हो जाएंगे। हम इस स्थिति में क्या करें, क्या एक क्षत्राणी होने के नाते हमारा कोई कर्तव्य नहीं। हम अपना धर्म किस प्रकार निभाएं। वरिष्ठ महारानी सा पाटमदे जी, हंसावती जी और शेष सभी महाराज गजसेन जी की रानियाँ दुर्ग के घेरे की विषम परिस्थिति में सती नहीं हो पाए जिसका अभी भी उन्हें बहुत मलाल है। सभी चाहते हैं की अपनी वंश परम्परा का निर्वहन करते हुए हमें वह अवसर मिले। राणा सहदेव-आप सभी भी अपना धर्म निभाएं इसके लिए आप क्या चाहते हैं।

रानी पंवार जी-जब आपको युद्ध में हमारी विजय नहीं दिखाई पड़ रही है और हमारे युवराज शालीवाहन जी सुरक्षित बहुत दूर पहुँच गए हैं। तो ऐसी स्थिति में आप सभी पुरुष वीरगति चाहते हैं तो हम भी सभी सती होना चाहते हैं। मगर इस बार हम सभी वीर योद्धाओं की चिता पर नहीं उनसे पहले अपना बलिदान देना चाहते हैं ताकि आप सभी इस गर्व के साथ युद्ध कर सकें कि हमारी स्त्रियों ने जो बलिदान दिया है हमें उनसे भी श्रेष्ठ युद्ध करना है।

राणा सहदेव-धन्य हो पंवार जी! क्षत्राणियों की वीरता और साहस के आगे हमारा बलिदान आज मुझे छोटा नजर आ रहा है। मैं तुरंत दरबारियों से इस पर मंत्रणा करता हूँ।

राणा सहदेव गजनी के दरबार में मंत्रणा करते हुए।

राणा सहदेव-आज गजनी की रक्षा के लिए हम सभी के बलिदान होने का दिवस है हम सभी केसरिया पहन कर सौगंध लेते हैं कि शत्रु को अधिक से अधिक हानि पहुँचाते हुए अपना बलिदान देना है। जब तक हम में से एक भी क्षत्रिय जिंदा रहेगा तब तक शत्रु हमारे पुरखों के इस किले में पैर ना रख पाए क्या आप सभी तैयार हैं?

सभी दरबारी-(एक स्वर में) हम सभी तैयार हैं।

राणा सहदेव की जय हो

जय श्री कृष्ण हर हर महादेव

राणा सहदेव-इस बार विश्व के इतिहास में जो नहीं हुआ वह होगा। रनिवास की सभी रानियां और महाराज गजसेन जी की रानियां जो सती नहीं हो पाई सभी हम सभी का हौसला बढ़ाने और इतिहास में अपना नाम अमर करने को हमारे बलिदान से पूर्व ही सती होना चाहती हैं। वे चाहते हैं कि हम किले का द्वार खोलें उससे पूर्व वे सभी श्रृंगार करके चिताएं सजा कर हमसे पूर्व बलिदान होना चाहती हैं, वे चाहती हैं कि सदैव आप पुरुष ही हमसे पहले स्वर्ग पधारते हैं इस बार स्वर्ग में हमारा स्वागत करने के लिए वे हमसे पूर्व जाना चाहती हैं। हमने सदैव स्त्रियों का सम्मान किया, उन्हें अव्वल दर्जा दिया, हर कार्य में हमने उनका सम्मान किया तो आज वे स्वर्ग के मार्ग पर हमसे एक कदम आगे रहना चाहती हैं, तो हम उन्हें मना नहीं कर पाए। यह विश्व के इतिहास की एक अनोखी घटना होगी, हमारी सात पीढ़ियों से रानियाँ सती होती आई हैं मगर सामूहिक रूप से पति के बलिदान से पूर्व चिता पर चढ़ जाना यह क्षत्रिय कुल में अपनी जीवटता के लिए आन बान और शान के लिए किया गया यह बलिदान जौहर कहलाएगा ताकि हमारी आने वाली पीढियो के लिए हमारे आराध्याय श्री कृष्ण के वचनों के पालन ''एक

भाग्यवान क्षत्रिय के जीवन में युद्ध का अवसर आता है'' इसलिए हम युद्ध करेंगे। इसकी पुनरावृत्ति होगी हमारी आने वाली पीढ़ियाँ हमारे क्षत्राणियों के बलिदान से सदैव संघर्षशील और साहसी बनेगी।

सभी दरबारी-महारानी पंवार जी और सभी क्षत्राणियों की जय हो। जय हो। जय हो।

हम सभी किले में जितने भी सैनिक हैं सभी की स्त्रियां सती होंगी, सभी की स्त्रियां सामूहिक जौहर करेगी। दरबार में सभी सामंत और प्रमुखों द्वारा केसरिया पाग बांधी गई, कुसुंबा (अफीम) पीकर सभी ने वीरता से बलिदान होने की सौगंध खाई।

इधर योद्धाओं ने राणा सहदेव के नेतृत्व में विक्रम संवत् 251 में किले के द्वार खोलकर बाहर साका किया और उधर किले के अंदर क्षत्राणियों ने चिताएं जलाकर जौहर किया।

अपने पुरखों के भव्य किले के द्वार खोलकर यदुवंशी शत्रु पर अकस्मात टूट पड़े। ऐसी आत्मघाती विपदा का शत्रु को कोई पूर्व अनुमान नहीं था। इसलिए इससे पहले कि वह संभल सके राणा के सैनिकों ने मरने से पहले कत्ले आम मचा दिया। किले के बाहर मुट्ठी भर योद्धा चिर निद्रा में सोए पड़े थे, अंदर अग्नि के तांडव ने सब कुछ स्वाहा कर दिया।

शत्रु ने शमशान की तरह शांत पड़े किले पर अधिकार करके जश्न मनाया।

रुमीपत, खोरासन पत, हाय, गाय, पाखुर पाय।
चिता तेरी, चित्त लेगी, सुनो जदुपत राय।।

उधर युवराज शालीवाहन ने श्रद्धा से वैष्णो देवी के दर्शन करके पूजा अर्चना की। और वहाँ से पंजाब लौटकर उन्होंने लाहौर के समीप विक्रम संवत् 251 में शालीवाहनपुर नगर की स्थापना की और वहाँ यदुवंशियों की राजधानी रखी और हंसार को अपनी खालसे की जागीर में रखा।

गजनी का साका और जौहर जिसमें क्षत्रिय और क्षत्राणियों ने स्वेछा से प्राणों की आहुति दी विश्व के इतिहास में सबसे पहली ऐसी घटना थी। यदुवंशियों को ऐसा आत्मत्याग करने की सीख कहां से मिली संभवतः सती क्रिया का ही एक चरम विकसित अगला रूप था जौहर।

उस समय ईसाई धर्म शैशवावस्था में था, इस्लाम का प्रादुर्भाव भी कहीं शताब्दियों बाद हुआ था, धर्म केवल वैदिक या बौद्ध ही थे इसलिए खुरासानी केवल वैदिक या बौद्ध धर्म के ही हो सकते हैं। साका और जौहर सती की तरह एक स्वाभिमानी प्रथा व परम्परा थी। जीवट जीना था जीते जी किले का अधिकार अपने स्वयं के शत्रु भाई को भी स्वीकार नहीं था।

संदर्भ- गजनी से जैसलमेर

विजय का केवल एक तरीका हम जानते हैं-शत्रु को पराजित किया जाए। यही तरीका हम मित्र पर विजयी होने के लिए प्रयुक्त कर लेते हैं। मित्र पर विजय हासिल करने का और ही तरीका है, जो युक्ति संगत और उपयुक्त है। वह तरीका है मित्र से स्वयं से पराजित होना। केवल इस तरीके से हम मित्र को जीत सकते हैं। आध्यात्मिक साधना में भी यही तरीका काम में लाया जाता है। सर्वशक्तिमान को हम शक्ति से नहीं हरा सकते, उसे हटाने के लिए हमें अपनी पराजय को सर्वात्मना घोषित कर देनी चाहिए।

- पू. तनसिंह जी

जयचन्द पर देशद्रोह का आरोप एक सोचा-समझा षड़यंत्र

– युधिष्ठिर

सम्राट जयचन्द गहरवार किसी भी प्रकार से देशद्रोही नहीं थे। जयचन्द एक उच्च कोटि के शासक थे। जयचन्द को बचपन से ही अनेक प्रकार का सैनिक प्रशिक्षण तथा धार्मिक शिक्षा दी गई थी। अपने पिता विजयचन्द के पश्चात् जयचन्द ने अपने राज्यकाल में अपनी सेना को और भी सुगठित किया था। कन्नौज का साम्राज्य बड़ा विशाल था, सेना भी विशाल थी। जयचन्द को दस पंगुल राजा कहते थे। इसी विशाल सेना के बल पर जयचन्द का उत्तर भारत के अधिकांश क्षेत्रों पर अधिकार था।

जयचन्द ने सिन्धु नदी के तट पर मुहम्मद गोरी को आने के बाद पराजित किया था। जयचन्द के युद्ध से सिन्धु नदी का जल लाल हो उठा था। विद्यापति ने अपनी पुस्तक 'पुरुष परीक्षा' में लिखा है कि- ''बारं-बारं च यवनेश्वर: (मुहम्मद गोरी) पराजयी पलायते'', मुसलमान बार-बार पराजित हुए और युद्ध भूमि से पलायन कर गए। 'रम्भा मंजरी' में भी जयचन्द द्वारा यवनों को बार-बार पराजित करने के कारण ही जयचन्द को 'निखिल यवन क्षयकरः' कहा गया है।

जयचन्द एक कट्टर वैष्णव विन्दू थे। उन्हें मुहम्मद गोरी द्वारा हिन्दू-मंदिरों को तोड़ने, हिन्दू स्त्रियों को अपमानित करने, पुरुषों को गुलाम बनाने की पूरी जानकारी थी। इसी कारण से वे मुगलों से शत्रुता का भाव रखते थे।

इन सब बातों से यह स्पष्ट होता है कि जयचन्द कभी भी गोरी को आक्रमण करने का न्योता नहीं दे सकते थे और न ही वे गोरी को सैनिक सहायता दे सकते थे।

कन्नौज साम्राज्य के लिये दिल्ली का राज्य बफ्फर इस्टेट की ही तरह उपयोगी था, क्योंकि पश्चिम से आक्रमण के लिए दिल्ली का पतन आवश्यक था। जयचन्द जैसे सूझ-बूझ रखने वाला एवं सुलझा हुआ शासक ऐसी भूल कैसे कर सकता था कि वह एक विदेशी उन्मादी मजहबी शासक को दिल्ली पर आक्रमण कर उसे नष्ट करने के लिये बुलाता, जबकि वह स्वयं भी इन यवन मुसलमानों को कई बार हराकर खदेड़ चुका था। दिल्ली को हराकर अधिकार करने वाला आक्रान्ता निश्चित रूप से कन्नौज के लिए खतरनाक शत्रु सिद्ध होता, इतनी समझ जयचन्द को क्या नहीं थी?

उस समय गोरी के आक्रमणों से निबटने में सब सहयोगी नहीं थे। जिस पर आक्रमण होता वही युद्ध करता, बाकी चुपचाप रहते थे। गुजरात पर आक्रमण हुआ, चालुक्य नरेश ने पृथ्वीराज चौहान से सहयोग मांगा, नहीं मिला। अकेले गोरी को हराया। पृथ्वीराज की सीमा में गोरी के कई छोटे-बड़े आक्रमण हुए, उससे पृथ्वीराज ही निपटे।

तराइन (कुरुक्षेत्र) के युद्ध में जयचन्द पर देशद्रोह का आरोप लगाया जाता है कि, पृथ्वीराजू को उसने सहायती नहीं दी और पृथ्वीराज पराजित हो गए। इन आरोपों का मूल स्रोत पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि और चारण चन्द बरदाई (चाँद वृहदराय लाहौरी) द्वारा रचित 'पृथ्वीराज रासो' है। जिसका उदाहरण देकर अबुल फजल ने 'आइने अकबरी' में इन आरोपों को दुहराया और बाद में भी कई इतिहासकारों ने आँख मूंद कर इसका अनुसरण किया? रासो के अनुसार पृथ्वीराज गजनी ले जाए गए और चन्दवरदाई भी वहाँ पहुँचे। शब्दभेदी बाण चलाने का आयोजन, चन्द का कविता पाठ, गोरी का मारा जाना, फिर दोनों ने एक-दूसरे को खत्म किया, इसके पूर्व पृथ्वीराज की आँखें निकाल ली गई थी। मुहम्मद गोरी जैसे चालाक-क्रूर शासक ने दोनों के पास कटार-बिच्छुआ कैसे रखने दिया? निरन्तर भारत में विचरण करने वाला एवं तक्षशिला को केन्द्र बनाने वाला गोरी क्यों चन्द की कविता का अर्थ या इशारा न समझ सका? दोनों के मर जाने के उपरान्त रासो में इस कथा को किसने लिखा?

लेखक को कैसे जानकारी मिली? मुसलमान लेखकों ने तो कहीं भीं इसका जिक्र नहीं किया है। रासो पढ़ने से ज्ञात होता है कि पृथ्वीराज के समय से मुगल अकबर-जहाँगीर के काल तक (12वीं सदी ई. से 17वीं सदी ई.) में कम से कम तीन लोगों ने (चन्द, जल्हण, सुरज) रासो में अपने विचार रखे हैं और चौथे की भी संभावना उसमें लगती है। पृथ्वीराज जैसा वीर जो रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त करना श्रेयष्कर मानता था वह बार-बार पराजित होने वाले तुरक के हाथों कैसे पड़ सकता था। अगर ऐसी परिस्थिति उसके सामने होती तो वो स्वयं को युद्धक्षेत्र में समाप्त कर लेता। लेकिन पृथ्वीराज तो युद्ध स्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हो गया था। गजनी ले जाने वाली बात ही कवि की अपनी महत्ता बनाने की ही बात है। जहाँ तक गोरी की हत्या की बात है इस पर अन्य भारतीय और मुस्लिम लेखकों ने तीन संदर्भ प्रस्तुत किए हैं-पहला है मुहम्मद गोरी की हत्या सन् 1205 ई. में झेलम के पास एक सैनिक शिविर में रात्रि में सोते हुए, स्थानीय शत्रुओं द्वारा कर दी गई थी। दूसरा है मुहम्मद गोरी को सन् 1205 ई. में गजनी लौटते समय खोखरों के हाथों मरना पड़ा। तीसरा है मुहम्मद गोरी को वापसी के समय अपने ही मुसलमान विरोधी के हाथों मरना पड़ा।

जब गोरी ने गुजरात के चालुक्यों पर आक्रमण किया तब चालुक्यों ने पृथ्वीराज से मदद मांगी। पृथ्वीराज ने मदद नहीं की। चालुक्य अपने ही दम पर विजयी रहे। दूसरी ओर जब पृथ्वीराज 1191 एवं 92ई में गोरी से लड़े तब उन्होंने जयन्चन्द से कोई मदद नहीं ली और अन्ततः पराजित हुए तो फिर जयचन्द कैसे, कसूरवार हो गए? कैसे देशद्रोही हो गए? ऐसे में चालुक्यों की मदद न करने पर पृथ्वीराज को भी उसी श्रेणी में माना जाना चाहिए।

इतिहास की पुस्तकों में ऐसा कहीं उल्लेख नहीं मिलता कि कभी पृथ्वीराज ने जयचन्द पर या जयचन्द ने पृथ्वीराज पर आक्रमण किया हो या एक दूसरे की सीमा को धकेलने की या क्षेत्र हथियाने का प्रयास किया हो। अत: विदेशी गोरी के आक्रमण करने पर, मनमुटाव रखने पर भी पृथ्वीराज सहायता के लिए कह सकते थे, परन्तु ऐसा नहीं किया और अपने मन से जयचन्द मी पृथ्वीराज की मदद को नहीं गये।

पृथ्वीराज ने कभी भी किसी भी युद्ध के लिए जयचन्द से कोई सहायता नहीं मांगी। मुहम्मद गोरी के संग जो सन् 1191 ई. एवं 1192 ई. में युद्ध हुआ उसमें भी पृथ्वीराज ने जयचन्द से कोई सैनिक सहायता नहीं ली। तत्कालीन राजनीति में स्वतः युद्ध में पृथ्वीशन की मदद के लिए जाना जयचन्द के लिए कैसे संभव था?

किसी भी मुसलमान यात्री ने अपने संस्मरणों में जयचन्द द्वारा राजसूय यज्ञ करना, संयोगिता स्वयंवर एवं गोरी को चढ़ाई करने के लिए आमंत्रण का कोई उल्लेख नहीं किया है। जयचन्द ने अपने ताम्रपत्रों और शिलालेखों में इसका उल्लेख नहीं किया है।

पृथ्वीराज और चन्दबरदायी के समकालीन अनेक रचनाकारों ने उस कालावधि में अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जैसे- पृथ्वीराज विजय, हम्मीर महाकाव्य, रम्भा मंजरी, प्रबन्ध कोष आदि। इन पुस्तकों में राजसूय यज्ञ तथा संयोगिता स्वयंवर तथा जयचन्द द्वारा मुहम्मद गोरी को आमंत्रण का कहीं भी उल्लेख नहीं है।

आइये देखते हैं इतिहासकार क्या कहते हैं। इतिहासकार डॉ. आर.सी. मजुमदार करते हैं- ''इस कथन में कोई सत्यता नहीं है कि महाराज जयचन्द ने पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए मुहम्मद गोरी को आमंत्रित किया। मुहम्मद गोरी का पृथ्वीराज पर दूसरा हमला गोरी द्वारा पंजाब पर अधिकार कर लेने के लिए प्रायः अनिवार्य परिणाम था।''

डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी कहते हैं- ''पृथ्वीराज रासो के अनुसार जयचन्द और मुहम्मद गोरी के बीच पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिए एक गुप्त समझौता था, इस कथन में कोई सत्यता नहीं हैं। तत्कालीन मुसलमान इतिहासकारों ने इसका कहीं भी उल्लेख नहीं किया है।''

श्री महेन्द्रनाथ मिश्र कहते हैं- ''यह धारणा कि जयचन्द ने राजसूय स्वयंवर यज्ञ किया और मुहम्मद गोरी

को पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया, उस पुस्तक पर आधारित है जिसे पृथ्वीराज के एक दरबारी कवि ने लिखा था। उस समय के कतिपय ग्रंथ प्राप्त हैं किन्तु किसी में भी इन बातों का उल्लेख नहीं है। अतः यह अनुचित होगा कि जयचन्द के प्रतिद्वंद्वी शासक पृथ्वीराज के दरबारी कवि पर विश्वास किया जाय।''

डॉ. राजकुमार कहते हैं– ''यह निर्विवाद है कि जयचन्द ने पृथ्वीराज को सहायता नहीं दी थी। यह उसकी महानतम राजनैतिक भूल थी। परन्तु उसे देशद्रोही मानना सर्वथा अनुचित है। इस बात का पर्याप्त प्रमाण नहीं है कि उसने मुहम्मद गोरी को दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया था। जयचन्द वीर थे और उसने वीरतापूर्वक युद्ध करके संग्राम क्षेत्र में ही अपने प्राण विसर्जित किए। भारतीय ही नहीं, मुसलमान लेखकों ने भी उसकी प्रशंसा का वर्णन किया है। कामिल उत्तवारीख के रचयिता इबने नसीर ने उसे भारत का सर्वश्रेष्ठ शासक माना है।

पावेल-प्राइस कहते हैं– ''यह बात आधारहीन है कि महाराज जयचन्द ने मुहम्मद गोरी को पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।''

डॉ. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार– ''पृथ्वीराजरासो में राजसूय यज्ञ तथा स्वयंवर का उल्लेख मनगढ़ंत और काल्पनिक है। जयचन्द के शासनकाल के बहुत पहले से ही भारत में राजसूय यज्ञ तथा स्वयंवर की प्रथा बन्द हो चुकी थी।''

मनीष सिंह (क्षत्रिय कल्याण सभा, भिलाई) के अनुसार– ''संयोगिता जयचन्द की पुत्री नहीं थी। वह एक दासी की पुत्री थी। एक दासीपुत्री के लिए स्वयंवर रचाना और उसमें अनेक राजपूत राजाओं को आमंत्रित करना, यह बात तर्क संगत नहीं लगती।''

भविष्य पुराण के अनुसार– ''दिल्ली के चौहानों के सामन्त राजा अनंगपाल की छोटी पुत्री चन्द्रकान्ति का विवाह अजमेर के चौहान राजा सोमेश्वर देव से तथा ज्येष्ठ पुत्री कीर्तिमालिनी का विवाह कन्नौज के राजा विजयचन्द से हुआ था, पृथ्वीराज चन्द्रकान्ति के पुत्र थे और जयचन्द कीर्तिमालिनी के। अनंगपाल को पुत्र न था अतः उसने पृथ्वीराज को गोद ले लिया। दिल्ली का राज्य पूर्णतया पृथ्वीराज को दे दिया और स्वयं सन्यासी होकर हरिद्वार चले गए।''

अगर इतिहासकारों की बात सच मानें तो दासी पुत्री के स्वयंवर में राजपूत राजाओं को आमंत्रित करना समस्त राजपूतों के लिए अपमानजनक था। जयचन्द द्वारा सभी राजपूतों का अपमान करने का आत्मघाती कदम उठाना कैसे सम्भव था। अगर संयोगिता जयचन्द की औरस पुत्री थी और पृथ्वीराज व जयचन्द मौसेरे भाई थे तो फिर पृथ्वीराज को स्वयंवर के लिए आमंत्रण कैसे मिलता? क्यों मिलता? स्वयंवर सभा के द्वार पर पृथ्वीराज की मूर्ति लगाना, मूर्ति को संयोगिता के द्वारा माला पहनाना, संयोगिता का अपने वीर चाचा के प्रति प्रेम-आसक्ति और विवाह की चाह, चाचा पृथ्वीराज चौहान का भतीजी संयोगिता (अपने मौसेरे भाई की बेटी) का अपहरण कर विवाह करना कैसे संभव था? क्षात्रधर्म, आर्यधर्म, हिन्दू धर्म यहाँ तक कि इस्लाम मजहब के भी विपरीत? क्षत्रिय धर्म से ओतप्रोत राजपुत्रों का इसमें पृथ्वीराज का समर्थन व सहयोग कैसे?

पृथ्वीराज कर्पूर देवी के पुत्र थे अथवा अनंगपाल तोमर के दोहित्र थे, इस बात पर मतभेद हो सकता है परन्तु जयचन्द ने देशद्रोह किया, यह ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सत्य नहीं है, निराधार। फैलायी गई भ्रांति है।

जयचन्द क्षात्र धर्म के प्रतिपालक थे। पृथ्वीराज के शासन को क्षति पहुँचाने वाले उन्हीं के राज्य के कर्मचारी वर्ग का एक समूह था। जो दिल्ली की नयी व्यवस्था से अप्रसन्न था। उसी ने सूफी संतों के वेश में आये गोरी के गुप्तचरों को अपने घरों पर रखा। समस्त गोपनीय भेद बताये। गजनी के पातसाह से पत्र व्यवहार भी किया। जिसके प्रमुख सूत्रधार थे, नित्यानन्द खत्री, धर्मायन कायस्थ और माधव भट्ट, जिनका नाम आज कोई नहीं लेता। राज्य कर्मचारी होते हुए भी इन्होंने राष्ट्रभक्ति को तार-तार करते हुए अपने शासक के विरुद्ध षड़यंत्र रचा।

जयचन्द की फौज जब चलती थी तब अग्रिम पंक्ति में पानी, पिछले में कीच और तत्पश्चात धूलि उड़ती थी। इटावा जिले का असाई दुर्ग और गंगा तट का कर्रा दुर्ग इन्होंने ही बनाए थे। कर्रा दुर्ग पर मुसलमानों का हमला हुआ था। जयचंद ने उन्हें परास्त कर भेजा था।

जयचन्द गहरवार बड़े दानी थे। अभी तक प्राप्त 14 ताम्बे के दानपत्र में उनके समय-समय पर किए गए दान पुण्य के कार्यों का वर्णन मिलता है। 'रम्भामंजरी नाटक' भी इन्हें दानी कहता है। जयचन्द के राजसूय यज्ञ करने का कोई शिलालेख एवं ताम्रपत्र या दानपत्र अब तक प्राप्त नहीं हुआ है। पृथ्वीराज रासो के अतिरिक्त अन्य किसी पुस्तक में राजसूय यज्ञ किया, का वर्णन नहीं है।

सन् 1191 ई. के बाद मुहम्मद गोरी ने कुटनीति, चालबाजी, और धोखेबाजी का सहारा लिया। उसने उत्तर-पश्चिम के बहुत से राजाओं को अपनी ओर मिला लिया। पृथ्वीराज के दरबार में धर्माकर कायस्थ था वो गोरी के साथ मिल गया। वह चौहानों की सभी प्रकार की कमजोरियों की सूचना बार-बार गोरी को देने लगा। जम्मू के राजा विजयचन्द ने पूरी मदद का वादा करके अपने पुत्र राजकुमार नृसिंहदेव को सेना के साथ मुहम्मद गोरी के पास भेजा। कांगड़ा का राजा हम्मीर भी गोरी से मिल गया। जेजाकभुक्ति के चन्देल भी पृथ्वीराज से नाराज होने के कारण गोरी की विजय की कामना करने लगे। घाटिका प्रदेश के राजा ने भी मुहम्मद गोरी का साथ दिया।

सन् 1190-91 ई. में गोरी ने लाहौर से तबरहिंद (भटिंडा) तक अधिकार कर लिया, जिससे उसका पृथ्वीराज से सन् 1191 ई. में युद्ध हुआ और तराइन (कुरुक्षेत्र) के इस युद्ध में दिल्ली नरेश गोविन्द राय तंवर ने गोरी को घायल कर दिया, जिसे एक खिलजी सरदार ने बचाने की कोशिश की पर फिर भी वह बंदी बना लिया गया और एक बार पुनः क्षमा कर छोड़ दिया गया। इस बार वह पृथ्वीराज के हाथों बुरी तरह पराजित हुआ था। मरते-मरते बचा था। भारी अपमान सहकर बहुत कुछ छोड़कर व खोकर लौटा था। अन्तिम निर्णायक युद्ध लड़ने के लिये सब प्रकार से तैयारी कर विशाल फौज के साथ सन् 1192 ई. में आया था। पृथ्वीराज ने संदेश भेजा कई बार पराजित हो चुके हो, इस बार भी वैसे ही होगा, वापस लौट जाओ। गोरी ने कहा कि मैं अपने बड़े भाई गजनी के शासक के कहने पर आया हूँ, मजबूर हूँ, फिर भी आपका संदेश उन तक भेज रहा हूँ और वापस लौटने का ही विचार रखता हूँ। उसके इस उत्तर से पृथ्वीराज व उनकी सेना युद्धविराम मानकर निश्चिंत हो गए। गोरी ने सामने थोड़ी सेना रखकर बाकी सेना को दो भागों में विभाजित किया और दो ओर से घेरने के लिये धीरे-धीरे बढ़ने को कहा। इस प्रकार छलकर अचानक उसने आक्रमण कर दिया। रात्रि में सेना सो रही थी फिर भी खूब लड़े। पृथीराज वीरगति को प्राप्त हुए।

कन्नौज पर चढ़ाई करने के लिये गोरी ने दो वर्ष तक सब प्रकार से तैयारी की। सन् 1194 ई. में उसने उस समय चढ़ाई की जब जयचन्द की सेना का बहुत बड़ा भाग राजकीय कार्य में साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में गया हुआ था और गद्दारों ने इसकी सूचना गोरी को भेज दी थी। इस बार भी गोरी ने सामने थोड़ी सेना रखकर बाकी को दो हिस्सों में विभाजित कर दो ओर से घेरने के लिये लगाया। विदामयुतापुरी के सामंत शासक राष्ट्रकूटों ने भी इसमें कन्नौज के नमक का कर्ज खूब अदा किया। जयचन्द भी पृथ्वीराज की तरह ही युद्धभूमि में बलिदान हो गए। जयचन्द को सोने के तार से मढ़े दाँतों के कारण पहचाना जा सका।

अत: यह पूर्ण रूप से असत्य है कि जयचन्द देशद्रोही थे। यह क्षत्रिय राजपूतों और उनके पूर्वजों के क्षात्रधर्म और संस्कृति को गिराने का एक कुप्रयास है। जयचन्द को जबरन विश्वासघाती करार दिया जाता है और गीत गाए जाते हैं-''जयचन्द-जयचन्द तूने देश को बर्बाद कर दिया, गैरों के हाथों हिन्द को आबाद कर दिया।'' सम्राट जयचन्द गहरवार किसी भी प्रकार से देशद्रोही नहीं थे।

डूंगरपुर

– खींवसिंह सुल्ताना

(पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के 'बदलते दृश्य' प्रकरण में डूंगरपुर के महान चरित्रों के संदर्भ में)

मेवाड़ के शासक क्षेमसिंह के सामन्त सिंह और कुमार सिंह नामक दो पुत्र थे जिनमें से ज्येष्ठ पुत्र सामन्त सिंह उनके बाद मेवाड़ का शासक बना। सामन्त सिंह के समकालीन गुजरात के शासक अजयपाल सोलंकी की राज्य विस्तार की भावना के कारण सामन्त सिंह से उसका युद्ध हुआ। यह युद्ध संभवत: 1174 ई. में हुआ था। सामन्त सि।ह की अभूतपूर्वा-वीरता से इस युद्ध में मेवाड़ की विजय हुई। युद्ध में परास्त गुजरात के सोलंकी शासक अजयपाल की प्राण रक्षा उसके सामन्त आबू के परमार धारावर्ष के छोटे भाई प्रह्लादन द्वारा की गयी। गुजरात से निरन्तर संघर्ष के कारण कालान्तर में सामन्त सिंह को मेवाड़ छोड़ना पड़ा और उन्होंने बागड़ में एक नवीन राज्य की स्थापना की। मेवाड़ के बाद गुजरात वालों ने बागड़ में भी सामन्त सिंह को स्थिरता से नहीं रहने दिया। सामन्त सिंह का विवाह पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बहिन पृथाबाई से हुआ था। बागड़ से सामन्त सिंह पृथ्वीराज चौहान के पास चले गए और पृथ्वीराज चौहान और विदेशी आक्रमणकारी शहाबुद्दीन गौरी के मध्य हुये युद्ध में पृथ्वीराज की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए। सामन्त सिंह के बाद उसके पुत्र जयंतसिंह ने अपने बाहुबल से अपने खोये हुए पैतृक राज्य को पुन: प्राप्त किया। ई.सं. 1220 के आस-पास जयन्त सिंह ने अपने पैतृक राज्य का गुजरात से पुन: प्राप्त किया। जयंतसिंह के बाद उसका पुत्र सीहड़देव बागड़ का शासक बना। सीहड़देव ने राज्य विस्तार करते हुए बड़ौदा को जीत कर उसे अपनी राजधानी बनाया। सीहड़देव के दो शिलालेखों जगत गाँव के देवा मन्दिर में प्राप्त और भैकरोड़ गाँव के विन्ध्यवासिनी माता के मन्दिर में प्राप्ति से उनके शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है। सीहड़देव के बाद विजयसिंह देव (जयसिंह देव) बागड़ के स्वामी हुए। उनके बाद देवपाल देव शासक बने जिन्हें ख्यातों में देदू या देदा भी कहा गया है उन्होंने अर्थूना के परमार राज्य को अपने राज्य में मिला लिया था। देवपाल के बाद महारावल वीरसिंह देव, जिन्हें ख्यातों में वरसिंघ या वरसी लिखा है बागड़ के शासक बने वो एक पराक्रमी शासक थे।

उनके समय में वर्तमान डूंगरपुर शहर के आसपास के प्रदेश पर डूंगेरिया नामक भील का अधिकार था वह बड़ा उद्दंड और दुराचारी व्यक्ति था। वहीं के थाणा नामक एक गाँव में शालाशाह नाम का एक सेठ रहा करता था उसके एक अत्यन्त रूपवती कन्या थी। उसके बारे में सुनकर डूंगरिया भील ने उसके पिता शालाशाह को बुलाकर उससे विवाह की मंशा जाहिर की। शालाशाह द्वारा मना करने पर उसने उसकी पुत्री को बलात उठा ले जाने की धमकी दी जिससे घबरा कर उसने दो माह बाद की तिथि विवाह के लिए निश्चित कर दी। उसके बाद शालाशाह वीरसिंह देव के पास बड़ौदे गया और उनसे अपने दुख का सार वृतान्त कहा। वीरसिंह देव ने उसे ढाढस बंधाते हुए उसकी व उसकी पुत्री की उस दुष्ट से रक्षा का वचन दिया।

निर्धारित तिथि को जब डूंगरिया भील अपने साथियों के साथ शालाशाह के यहाँ पहुँचा तब वीरसिंह देव ने उसे और उसके साथियों को मारकर उस क्षेत्र के लोगों को उसके अनाचार से मुक्ति प्रदान की। उस समस्त प्रदेश पर वीरसिंह देव का अधिकार हो गया। वीरसिंह देव ने अपने पराक्रम से गुजरात का भी कुछ भाग अपने राज्य में मिला लिया था। उनके समय के शिलालेखों और उनके काल में बने मंदिरों से पता चलता है कि उनकी राजधानी बड़ौदा एक सम्पन्न नगर थी वहीं महारावल वीरसिंह देव एक पराक्रमी, उदार और वैभवशाली शासक थे।

आऊवा ठाकुर कुशालसिंह का भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान

– भंवरसिंह मांडासी

'आऊवा' मारवाड़ का एक छोटा-सा व साधारण श्रेणी का ठिकाना था। जिसके ठाकुर कुशालसिंह चाम्पावत थे। इनके हृदय में अंग्रेज विरोधी अग्नि बड़े उग्र रूप से धधक रही थी। जब मई 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की लहर पूरे देश में फैल गई तो राजस्थान भी इससे अछूता कैसे रह सकता था। यहाँ के राजा-महाराजा अंग्रेजों के साथ की हुई सन्धियों से बंधे हुए थे। इस कारण खुलकर सामने नहीं आ सकते थे।

जोधपुर की 'एरनपुर' छावनी के सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया व बागी होकर आबू पहुँच गये और वहाँ उन्होंने अंग्रेज अधिकारी कर्नल हॉल व कई अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया और वहाँ से 'चलो दिल्ली मारो फिरंगी' के नारे लगाते हुए आऊवा पहुँचे। आऊवा के ठाकुर कुशालसिंह ने 25 अगस्त, 1857 को इनको अपने यहाँ शरण दी। एरनपुर की बागी सेना ने 600 घुड़सवार, 150 तोपची व 1400 के लगभग पैदल सैनिक थे। इस सेना का नेतृत्व कर कुशालसिंह दिल्ली पर चढ़ाई करने की तैयारी करने लगे। खबर अंग्रेज अधिकारियों को पता चली। अत: आऊवा पर आक्रमण करने के लिए अंग्रेजों ने अजमेर, नीमच, मऊ व नसीराबाद की छावनियों से सेना एकत्र की और जनरल लॉरेन्श के नेतृत्व में सेना आऊवा पहुँची।

जोधपुर का पॉलिटिकल ऐजेन्ट भी 1500 सैनिकों को लेकर आऊवा पहुँच गया। इधर आऊवा में कुशालसिंह के साथ 5000 राजपूत एकत्रित हो गए थे। इनमें आसोप के ठाकुर शिवनाथसिंह, गूलर के ठाकुर बिशनसिंह, आलनियावास के ठाकुर अजीतसिंह मुख्य थे। इनके अलावा बांटा, लाम्बिया, राडावास, बांझावास, आसीन्द तथा मेवाड़ के रूपनगर, सलूम्बर व लसाणी के ठिकानेदारों की सेनाएँ थी। कुशालसिंह के प्रमुख सेनानियों में संग्रामसिंह चाम्पावत, बिशनसिंह खींची, बन्ना व रामा रावणा राजपूत, भोपालसिंह चाम्पावत, रिसालदार मुकद्दम बख्स, हणुवन्तसिंह शेखावत, नरसिंह तंवर आदि थे।

18 सितम्बर, 1857 को आऊवा में वीर राजपूतों ने अंग्रेजी सेना से देश की स्वतंत्रता के लिए डटकर युद्ध किया। आऊवा की सेना ने अंग्रेज अधिकारी 'मेशन' का सिर काटकर गढ़ के दरवाजे पर लटका दिया।

''ढ़ौल बाजै चंग बाजै, भलो बाज्यो बांकियो।
एजेन्ट को मारकर, दरवाजे पै टांकियो।।''

आसोप ठाकुर शिवनाथसिंह की सेना ने अंग्रेजों के तोपखाने पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजी सेना भाग खड़ी हुई और दो हजार अंग्रेज सैनिक कत्ल कर दिए गये। ब्रिगेडियर जनरल लॉरेन्श भागकर अजमेर चला गया। परन्तु इस समय दिल्ली में अंग्रेजों की जीत हो गई थी।

ठाकुर कुशालसिंह ने किलेबन्दी की। उन पर अंग्रेजों ने 'मेसन' की हत्या का मुकदमा चलाया। आऊवा की विजय और अंग्रेजी सेना की हार के समाचार जब गवर्नर जनरल लॉर्ड केनिंग के पास पहुँचे तो उसने 20 जनवरी, 1858 को पालनपुर और नसीराबाद से एक बड़ी सेना कर्नल होम्स के नेतृत्व में आऊवा भेजी। ठाकुर कुशालसिंह घबराये नही और अपने पास के 700 सैनिकों से ही अंग्रेजी सेना का चार दिन तक कड़ा मुकाबला किया।

साधनों की कमी थी, इस कारण कुशालसिंह 23 जनवरी को बरसात की अन्धियारी रात्रि में किले से निकल गये और तांत्या टोपे से मिलने मेवाड़ चले गए। अंग्रेजों ने आऊवा के किले पर अधिकार कर लिया, कत्ले आम किया गया और मन्दिरों को विध्वंश कर दिया। इसके बाद गुलर आदि दुर्गों को भी नष्ट किया।

कुशालसिंह को कोठारिया (मेवाड़) के ठाकुर

जोधसिंह चौहान ने अपने पास रखा। तांत्या टोपे, आलनियावास ठाकुर अजीतसिंह आदि को भी जोधसिंह ने अपने यहाँ रखा। स्वतंत्रता के इस अभियान में सलूम्बर के रावत केशरीसिंह भी सम्मिलित थे। इन्होंने भी स्वतंत्रता सेनानियों को पूर्ण सहायता दी। दिसम्बर 1858 में तांत्या टोपे को अपने पास रखा तब मेवाड़ के पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल शखर्स ने इनको धमकी भरा पत्र लिखा पर इन्होंने इसकी कोई परवाह नहीं की। इन्होंने स्वतंत्रता सेनानी नवाब रहमत अली खान को भी सैनिक सहायता करी।

इस स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा आलनियावास के किशनसिंह और मण्डावा ठाकुर आनन्दसिंह शेखावत भी थे। कुशालसिंह जब अंग्रेजों की नजर से बचने के लिए मेवाड़ चले गए तब कई क्रान्तिकारियों के साथ बिशनसिंह मण्डावा (शेखावाटी) के ठाकुर आनन्दसिंह के पास पहुँचे। आलनियावास के अजीतसिंह आनन्दसिंह के श्वसुर लगते थे। क्रान्तिकारी यहाँ से मण्डावा ठाकुर की सहायता लेकर दिल्ली की ओर बढ़े। नारनौल के पास अंग्रेजी सेना से इनका मुकाबला हुआ। वहाँ उनकी पराजय हुई। शेखावाटी में सलहेदेसिंह के शेखावतों और बीदावाटी के बीदावतों ने इन क्रान्तिकारियों की सहायता की।

इनके अतिरिक्त आलनियावास के उदयसिंह, गूलर के बिशनसिंह, गोठड़ा (बुन्दी) के ठाकुर बलवन्तसिंह हाडा, चौमू के ठाकुर रणजीतसिंह नाथावत, भिणाय के राजा बलवन्तसिंह, मलसीसर के कानसिंह बीदावत व गढ़ी के ठाकुर अर्जुनसिंह आदि ने भी इस स्वतंत्रता संग्राम में अपना विशेष योगदान दिया था जिसे भारत के स्वतंत्रता के इतिहास में उचित स्थान नहीं दिया गया है। जिसका मुख्य कारण इतिहास लेखन के कार्यों में अहम भूमिका रखने वाले वर्ग का सोच एक पूर्वाग्रह से ग्रसित था कि राजपूत समाज तो हमेशा से राजतंत्र व अंग्रेजों का हिमायती रहा है। अत: इस पूर्वाग्रह के कारण ही राजूपतों के योगदान को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नगण्य कर दिया गया है।

अत: मैं युवा पीढ़ी से आग्रह करना चाहूँगा कि गहन शोध व खोज के माध्यम से दबे हुए इतिहास को ढूंढकर ज्यादा से ज्यादा उजागर करने का प्रयास करें जिससे आमजन को इसकी जानकारी हो सके।

संदर्भ – **'शेखावाटी का इतिहास'**

सबसे बड़ा दरिद्र

सिंहगढ़ राज्य की सीमा के पास एक गाँव सोनपुर में एक महात्मा अपने दो शिष्यों के साथ आ पहुँचे। वहाँ की शान्ति और हरियाली देख कुछ दिन वे वहीं ठहर गए।

एक दिन महात्मा जी जब भिक्षा मांगने जा रहे थे, सड़कपर एक सिक्का दिखा, जिसे उठाकर उन्होंने झोली में रख लिया। दोनों शिष्य इससे हैरान थे। वे मन में सोच रहे थे कि काश सिक्का उन्हें मिलता, तो वे बाजार से मिठाई ले आते। महात्मा जी भांप गए। बोले–यह साधारण सिक्का नहीं है, मैं इसे किसी सुपात्र को दूंगा। पर कई दिन बीत जाने के बाद भी उन्होंने सिक्का किसी को नहीं दिया।

एक दिन महात्मा जी को खबर मिली कि सिंहगढ़ के महाराज अपनी विशाल सेना के साथ उधर से गुजर रहे हैं। महात्मा जी ने शिष्यों से कहा, 'वत्स! सोनपुर छोड़ने की घड़ी आ गई।' शिष्यों के साथ महात्मा जी चल पड़े। तभी राजा की सवारी आ गई। मंत्री ने राजा को बताया कि ये महात्मा जा रहे हैं। बड़े ज्ञानी हैं। राजा ने हाथी से उतर कर महात्मा जी को प्रणाम किया और कहा, 'कृपया मुझे आशीर्वाद दें।' महात्मा जी ने झोले से सिक्का निकाला और राजा की हथेली पर उसे रखते हुए कहा, 'हे सिंहगढ़ नरेश, तुम्हारा राज्य धन–धान्य से सम्पन्न है। फिर भी तुम्हारे लालच का अन्त नहीं है। तुम और पाने की लालसा में युद्ध करने जा रहे हो। मेरे विचार में तुम सबसे बड़े दरिद्र हो। इसलिए मैंने तुम्हें यह सिक्का दिया है।' राजा इस बात का मतलब समझ गए। उन्होंने सेना को वापस चलने का आदेश दिया।

अपनी बात

यह सारा जगत ऊर्जा का समूह है। मनुष्य भी उसी ऊर्जा का एक छोटा-सा रूप है। हम सब भी। यह ऊर्जा, यह शक्ति यदि बाहर की तरफ बहे तो काम बन जाती है, वासना बन जाती है। और अगर भीतर की तरफ बहे तो अकाम बन जाती है, आत्मा बन जाती है। जो भेद है वह सब दिशा का है। काम जब लौट पड़ता है वापस, अपनी तरफ, वापस घर की तरफ जब कामना लौट पड़ती है, तो अकाम बनता है, आत्मा बनती है। और जब काम ऊर्जा बाहर की ओर बहती रहती है जीवन से तब धीरे-धीरे आदमी क्षीण, निर्बल, निस्तेज होता चला जाता है। और वह अपनी कामना से दुनिया में बहुत-सी चीजें पा लेता है। लेकिन एक स्वयं अपने को पाने से वंचित रह जाता है। जिसे हमें पाना है, शक्ति उसी की तरफ जानी चाहिए। अगर हमें बाहर की वस्तुएँ पानी है तो शक्ति को बाहर जाना पड़ेगा और अगर हमें भीतर की आत्मा पानी हो तो शक्ति को भीतर जाना पड़ेगा।

यह ध्यान रखें कि काम से यहाँ अर्थ है, बाहर बहती ऊर्जा। अकाम से मतलब है, भीतर बहती हुई ऊर्जा। शक्ति के दो ढंग हैं-बाहर की तरफ बहे या भीतर की तरफ बहे। जब बाहर की तरफ बहती है तो व्यक्ति और सब पा सकता है, सिर्फ स्वयं को खो देता है। और सब पा लेने का भी कोई सार नहीं, अगर स्वयं खो जाये। सारा जगत भी हम पा लें तो भी कोई सार नहीं, अगर उस पाने में मैं ही खो जाऊँ। अगर ऊर्जा भीतर की तरफ बहती है तो अकाम बन जाती है।

काम का अर्थ है कामना। जब भी हम कोई कामना करते हैं तो हमें बाहर की तरफ बहना पड़ता है, क्योंकि इच्छा कहीं बाहर की तृप्ति की आशा बन जाती है। कुछ पाने को है बाहर तो हमें बाहर की तरफ बहना पड़ता है। हम सब बाहर बहते हुए लोग हैं। हम सब कामनाएँ हैं। चौबीस घण्टे हम बाहर की तरफ बह रहे हैं, किसी को धन पाना है, किसी को यश पाना है, किसी को प्रेम पाना है। और बड़ा आश्चर्य तो यह है कि गर परमात्मा पाने की कामना करते हैं तो उसे भी बाहर ढूंढते हैं। धर्म का बाहर से कोई सम्बन्ध नहीं। जिनके ईश्वर बाहर हैं उन्हें समझ लेना चाहिए कि उनका धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। जिनके पाने की कोई भी चीज बाहर है, वे कामी हैं। सिर्फ एक ही स्थिति में काम से मुक्ति मिल सकती है, वह है भीतर बहना शुरू हो जाएं। बाहर की कोई भी चीज पाने के लिए हमारी ऊर्जा को बाहर लें जाना पड़ता है और हम धीरे-धीरे खाली हो जाते हैं, समाप्त हो जाते हैं। फिर दूसरा जन्म, फिर एक ऊर्जा लेकर आते हैं, फिर बाहर की ओर बहते हैं, फिर समाप्त हो जाते हैं। इसी तरह समाप्त होते रहेंगे।

जन्म के साथ हम शक्ति लेकर आते हैं। मृत्यु के साथ हम शक्ति खोकर वापस लौट जाते हैं। जो व्यक्ति मृत्यु के साथ भी शक्ति लेकर वापिस जाता है, उसे फिर आने की जरूरत नहीं रह जाती। मृत्यु के साथ अधिकतर लोग शक्ति खोकर, निस्तेज, खाली कारतूस, चले हुए कारतूस, जिसकी खोल रह गई है गोली तो जा चुकी है, उस खोल को लेकर वापस लौट जाते हैं। जो व्यक्ति मरते क्षण में भी अपनी पूरी ऊर्जा को बचा कर ले जाता है, उसे लौटने की जरूरत नहीं पड़ती। 'ज्यों की त्यों धरि दिन्ही चदरिया'। कुछ खर्च नहीं किया। जो मृत्यु के क्षण में बिना कुछ खोये वैसा ही वापस लौट जाता है, जैसा जन्म के क्षण में आया था, उसे वापस जन्म लेने की जरूरत नहीं रहती। अकाम जन्म-मृत्यु से मुक्ति है। काम, बार-बार जन्म में लौट आता है।

अणु में अनन्त शक्ति है, यह विज्ञान ने अणु तोड़ कर स्पष्ट कर दिया है। धर्म ने अणु को जोड़ा है, योग किया है। मनुष्य की चेतना भी एक अणु है। उस अणु को यदि टूटा हुआ रहने दें तो सब ऊर्जा बह जाएगी। यदि अणु जुड़ जाए, योग हो जाए तो उसमें अनन्त ऊर्जा पैदा हो जाती है जो परमात्मा की अनुभूति है। पू. तनसिंह जी ने, पूज्य नारायणसिंह जी ने, पूज्य भगवानसिंह जी ने संसार के किसी भी आकर्षण के लिए अपनी ऊर्जा नहीं बहाई, अकाम की राह पकड़े रखी, आत्मा पा ली। ●

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**मेहराजोत।** सरकारी विद्यालय भवन, चांधन, जैसलमेर रूट - (1). जैसलमेर से भैंसड़ा के लिए वाया मेहराजोत बस है। (2) चांधन से बाड़मेर जाने वाली बस मेहराजोत होकर जाती है। (3) फलसुंड से जैसलमेर जाने वाली बस मेहराजोत होकर निकलती है।
02.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**धानेली, जैसलमेर।** (जैसलमेर, खुहड़ी, म्याजलार, झिनझिनयाली से आने वाले शिवरार्थी बैरसियाला फांटा उतरें, वहाँ से धानेली के लिए वाहन की व्यवस्था रहेगी।) **सम्पर्क सूत्र :** 7568681821, 8107090065
03.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**बिकलाई, जैतारण।** कंवर सा बावजी सम्पत सिंह जी फॉर्म हाउस, जिला-ब्यावर (जैतारण से टैम्पो, जीप रामावास तक के लिए उपलब्ध है। वहाँ से 3 कि.मी. दूर शिविर स्थल के लिए वाहन की व्यवस्था रहेगी।) **सम्पर्क सूत्र :** जितेन्द्र सिंह रायपुर - 8005715150 अजीतसिंह रुदिया - 9784475660
04.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**खारिया।** रामसर, बाड़मेर (रामसर से चौहटन मार्ग पर स्थित)
05.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**अनूपगढ़।** देवेन्द्र सिंह हरपालसर फार्म हाउस (6 एपीएम), अनूपगढ़, पूगल (बसें उपलब्ध हैं एवं बाड़ा कॉलोनी से टैक्सी व्यवस्था उपलब्ध है।) **सम्पर्क सूत्र :** हुकुम सिंह पुंदलसर- 8696545593
06.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**कोलासर।** पंचायत भवन कोलासर, पूगल (शिविर स्थल के लिए) बीकानेर से 1.15 व 3.15 बजे, बज्जू से 2.15 बजे एवं नोखा से 2.30 बजे बस उपलब्ध है।) सम्पर्क सूत्र : 6350486708
07.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**आकोली।** राजपूत कोटड़ी, चितलवाना (सांचौर से बस की सुविधा है।) **सम्पर्क सूत्र :** ईश्वर सिंह चौरा- 9982411848
08.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**पायली, रतनगढ़।**
09.	प्रा.प्र.शि.	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**परेवड़ी (कुचामन)।** राजपूत सभा भवन **सम्पर्क सूत्र :** राजेन्द्रसिंह परेवड़ी- 9672362121

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
10.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	08.08.2025 से 11.08.2025 तक	**आहोर।** आशापुरा रिसोर्ट, पचानवा, आहोर जालौर तख्तगढ़ मार्ग पर बस द्वारा उम्मेदपुर उतरें। वहाँ से हरजी रोड़ पर शिविर स्थल है। उम्मेदपुर से वाहन व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क सूत्र :** मदनसिंह थूंबा- 9413495628 खुमानसिंह दूदिया-9982067270
11.	प्रा.प्र.शि.	14.08.2025 से 17.08.2025 तक	**फरड़ोली बड़ी, जिला-सीकर।** सीकरसे पाटोदा वाया सिहोट जाने वाली बस मार्ग पर।
12.	प्रा.प्र.शि.	14.08.2025 से 17.08.2025 तक	बंधवारी। मेड ईजी स्कूल, सेक्टर 58 व 59 के पास, गुरुग्राम, हरियाणा। (नजदीकी मेट्रो स्टेशन 55 व 56 से बस की व्यवस्था होगी।) **सम्पर्क सूत्र :** 9650250458, 9116535640, 8440028074
13.	प्रा.प्र.शि.	14.08.2025 से 17.08.2025 तक	**बांसडीढ, बलिया।** SDDS किड्स करियर, उत्तरप्रदेश।
14.	प्रा.प्र.शि.	15.08.2025 से 17.08.2025 तक	**संतरामपुर।** (मध्य गुजरात) अह्वा इन्टरनेशनल स्कूल **सम्पर्क सूत्र :** सहदेवसिंह भूली- 9925784487 कुलदीपसिंह उन्डवा- 9427189933
15.	प्रा.प्र.शि.	15.08.2025 से 17.08.2025 तक	**भादरवा।** (मध्य गुजरात)। जी.आर. भगत हाई स्कूल, भादरवा, बरोड़ा **सम्पर्क सूत्र :** नितिनसिंह भादरवा- 9427602297 अरविन्दसिंह काणेटी- 9924648743
16.	प्रा.प्र.शि.	15.08.2025 से 17.08.2025 तक	**नासिक** (महाराष्ट्र)। नोट : 14 अगस्त की शाम तक शिविर स्थल पहुँचना है। **सम्पर्क सूत्र :** तेजपालसिंह सोढ़ा- 9225143161
17.	प्रा.प्र.शि.	15.08.2025 से 18.08.2025 तक	**धणा।** चामुण्डा माता जी मन्दिर, तहसील-सुमेरपुर, जिला-पाली। (पाली से सुमेरपुर NH हाइवे पर केनपुरा पहुँचे। केलपुरा से 5 कि.मी. दूर स्थित शिविर स्थल के लिए टेम्पो मिलेंगे।)**सम्पर्क सूत्र :** 9829112991
18.	प्रा.प्र.शि.	15.08.2025 से 18.08.2025 तक	**नापासर पकी तलाई,** बीकानेर **सम्पर्क सूत्र :** छैलूसिंह नापासर-9166403169, पदमसिंह-9509980419
19.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	15.08.2025 से 18.08.2025 तक	**हिण्डोन सिटी, करौली।** रामपुरा फार्म हाउस, वृन्दावन रिसोर्ट के पास, महवा रोड़ (जयपुर, करौली, भरतपुर, अलवर से बस सेवा) **सम्पर्क सूत्र :** अजयसिंह सोलंकी- 8079057547 रामचन्द्रसिंह चौहान- 6375325425

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
20.	प्रा.प्र.शि.	15.08.2025 से 18.08.2025 तक	**चौथ का बरवाड़ा,** जिला सवाई माधोपुर, राजपूत धर्मशाला। रेल तथा बस मार्ग जयपुर से सवाई माधोपुर। **सम्पर्क सूत्र :** उपेन्द्रसिंह राजावत- 9460441614 विजेन्द्रसिंह जी- 8619458068
21.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	**भेव।** कुंडलेश्वर महादेव मन्दिर, शिवगंज (भेव से मोछाल मार्ग पर बायीं तरफ 3 कि.मी. दूर) **सम्पर्क सूत्र:** शैलेन्द्रसिंह उथमण- 9664392370 विक्रमसिंह भेव- 9588409341
22.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	**तेजावास, रानीवाड़ा।** महादेव मन्दिर, जिला-जालौर (मालवाड़ा ओवर ब्रिज के पास से भीनमाल-रानीवाड़ा हाईवे से 2 कि.मी. अन्दर) **सम्पर्क सूत्र :** सुरेन्द्रसिंह तेजावास- 9920208010 शैतानसिंह (RI) तेजावास- 9352480870 रेवन्तसिंह जाखड़ी- 7665005702
23.	प्रा.प्र.शि.	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	**मादा भाखरी मंदिर, आहोर** (जालोर तखतगढ़ रोड़ पर चरली उतरें, वहाँ से 4 कि.मी. दूर शिविर स्थल है। साधन उपलब्ध रहेगा।) **सम्पर्क सूत्र :** मदनसिंह थुम्बा- 9413495628 भरतसिंह मंडला- 9119110165
24.	प्रा.प्र.शि.	05.09.2025 से 07.09.2025 तक	**अखतर** (सुरेन्द्र नगर) गैथला हनुमान जी की जगह

गजेन्द्र सिंह आऊ
शिविर कार्यालय प्रमुख (श्री क्षत्रिय युवक संघ)

इस दुनिया में सचमुच बहुत से बहुमूल्य पदार्थ हैं और वे प्रिय इसलिए हैं कि वे सहज सुलभ भी हैं। जिनकी कल्पना मात्र से चित्त को प्रसन्नता और संतोष मिलता है, वे मेरी कौम के बहुमूल्य रत्न हैं और उनकी सुलभता तो उनकी प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाती है। भगवान सदैव उन पर अपनी अहेतु की कृपा बरसाते रहें क्योंकि वे कीमती होकर भी हर जरूरतमंद को आसानी से मिल सकते हैं।

– पू. तनसिंह जी

श्री अम्बे गर्ल्स हॉस्टल

गुरुकृपा कोचिंग के सामने, सीकर मो. 8890110731

श्री अम्बे बॉयज हॉस्टल

केवीएम स्कूल के पास , विकास कॉलोनी, पिपराली रोड, सीकर
मो. 8441907880

श्री अम्बे हॉस्टल

सीएलसी रोड, पिपराली रोड, सीकर मो. 9079988603

श्री अम्बे बॉयज हॉस्टल

ALLEN कोचिंग के पीछे, सीकर मो. 7425971208

श्री अम्बे बॉयज हॉस्टल

प्राईड सिटी, पिपराली रोड, सीकर मो. 9521716155

रतन सिंह छिंछास मो. 9983100791

(लक्ष्मणगढ़, सीकर)

अगस्त सन् 2025
वर्ष : 62, अंक : 08

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या – Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्...

....

....

श्री संघशक्तिप्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कोर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष -6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक राजेंद्र सिंह राठौड़। Email : sanghshakti@gmail-com | Website : www-shrikys-org